ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

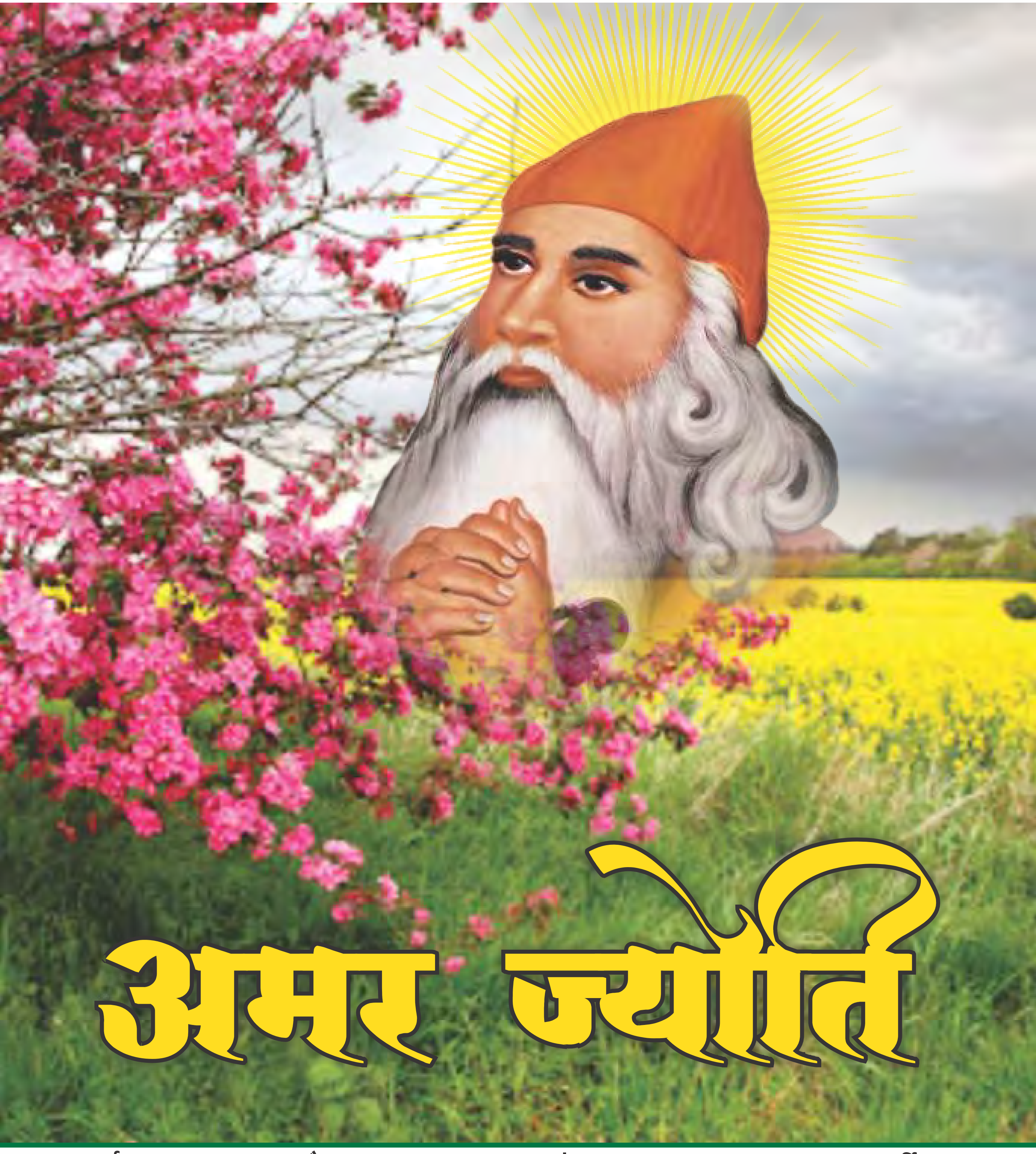

अमर ज्योति

वर्ष : 76 अप्रैल, 2025 अंक : 4 मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. माया बिश्नोई

व्यवस्थापक
रामनिवास सिहाग
दूरभाष : 81681-78429
94670-90729

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)

email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com
Website : http://amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद (व्यवस्थापक के अतिरिक्त) अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ हैं।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 150
25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

अमर ज्योति
1950
श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ
सबद-28		3
संपादकीय		4
साखी		5
माँ	*संगीता बिश्नोई*	6
मोक्ष के नाम पर	*सुरेन्द्र सुन्दरम्*	6
कलयुग केवल 'नाम' अधारा, सुमर-सुमर......	*नारायण राम जांगू*	7
गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी में 'ओ३म्' एवं 'ओ३म् स्वाहा'	*डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई*	12
वील्होजी का व्यक्तित्व एवं तित्व	*आचार्य कृष्णानन्द*	15
लघु कथा: असली सुख		17
भूली बिसरी जाम्भाणी विरासत	*डॉ. उदयराज खिलेरी*	18
कविता: पढ़ ले गुण ले सबदवाणी	*बनवारी लाल ईशरवाल*	19
जांभोजी ने जाट को सुनाया 14वाँ सबद	*पृथ्वीसिंह बैनीवाल*	20
बधाई संदेश		21-22
स्वामी विवेकानन्द एक उन्नयन प्रतिभा	*डॉ. सत्यपाल शर्मा*	23
बिश्नोई लोकगीत:श्रम परिहार के लोकगीत (3)	*डॉ. बनवारी लाल सहू*	27
सत्यवान-सावित्री की कथा का आधुनिक संदर्भ में महत्व	*डॉ. राजा राम*	31
बिश्नोई गृहस्थ महिलाओं की पंथ के उत्थान में महत्ती भूमिका	*किरण बिश्नोई*	34
बिश्नोई सभा, हिसार की नई कार्यकारिणी गठित		36-37
'अमर ज्योति पत्रिका सदस्यता अभियान'	*रामनिवास सिहाग*	38-40
सामाजिक हलचल		41
फार्म-4		42

सबद–28

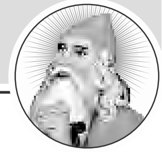

दोहा

शेख मनोहर यों कह्यो, रूह का कैसा वरण।
जम्भेश्वर शब्द उच्चार यों, परम तत्व अवरण॥

उपर्युक्त सबद शेख मनोहर एवं मुहमद खां ने ध्यानपूर्वक श्रवण किया तथा वहाँ से उठकर कुछ दूर चले गये, फिर विचार आया कि हम लोगों ने रूह–जीवात्मा का रूप रंग तो पूछा ही नहीं है। अब न तो आत्मा का रूप रंग जाने विना वापिस घर जाना ही ठीक है और न ही हम लोग वापिस जा सकते, क्योंकि विदाई लेकर आ चुके हैं। इस प्रकार से संशय में पड़ जाने पर गुरु जाम्भोजी ने उन दोनों को अपना दूत भेजकर वापिस बुला लिया तथा यह सबद सुनाया–

सबद–28

मच्छी मच्छ फिरै जल भीतर, तिहि का माघ न जोयबा।

भावार्थ– मछली एवं मगरमच्छ जल के भीतर ही रहते हैं तथा अन्दर ही मार्ग द्वारा घूमते हैं वे जलीय जीव जल की गति से परिचित हैं किन्तु हम पार्थिव उस जल की गति को नहीं जान सकते। उसी प्रकार से परम तत्व को जानने के लिये संसार से पृथक् अध्यात्म वृत्ति को अपनाना होगा अर्थात् जल की गति को जानने के लिये जल में प्रवेश करना पड़ेगा और परम तत्व को जानने के लिये तद्गत होना पड़ेगा।

परम तत्व है ऐसा, आछै उरवार न ताछै पारूं।

वह परम तत्त्व इस प्रकार का है जो न तो अति नजदीक है और न ही दूर ही है अर्थात् देशकाल वस्तु से अपरिच्छिन्न है। वह नजदीक भी विद्यमान है और दूर भी है।

ओवड़ छोवड़ कोई न थीयों, तिहिं का अन्त लहिबा कैसा।

उस परम तत्त्व आत्मा का न तो यह किनारा है और न ही वह किनारा, सीमा है अर्थात् वह असीमित है उसका अन्त पार कैसे पाया जा सकता है। आकाशवत् आर–पार रहित सर्वत्र व्यापक है।

ऐसा लो भल ऐसा लो, भल कहो न कहा गहीरूं।

उस सर्वेश्वर गम्भीर परम तत्त्व की प्राप्ति करो जो सदा एक रस नित्य सनातन है तथा वाणी का विषय न होते हुऐ भी अनुभव द्वारा अवश्य ही प्राप्त होता है।

परम तत्व के रूप न रेखा, लीक न लेहूं खोज न खेहूं।
वरण विवरजत भावै खोजो बावन बीरूं॥

उस परम तत्त्व रूह आत्मा के न तो कोई रूप है जो आंखों से देखा जा सके और न ही कोई रेखाएं ही हैं, यानि आकृति विशेष ही है जो पहचाना जा सके और न ही कोई मार्ग ही है। जिससे पहुँचा जा सके तथा न ही कोई खोज–पद्चिह्न ही है जिससे खोजा जा सके, न ही उनके चलने से खेह–धूली के सूक्ष्म कण ही उड़ते हैं जो अनुमान किया जा सके अर्थात् रंग, रूप, आकृति रहित ही है। अज्ञानी पुरुष चाहे उसे बावन प्रकार के भेरूं चौसठ प्रकार की जोगिणी आदि में, कहीं भी एक देश में मूर्ति आदि में खोजें वहाँ पर परम सत्ता सीमित नहीं हो सकती, न ही मिल सकती।

मीन का पंथ मीन ही जाणै, नीर सुरंगम रहीयूं।
सिध का पन्थ कोई साधु जाणत, बीजा बरतन बहियों।

मछली का मार्ग तो मछली ही जान सकती है क्योंकि वह जल में ही एकाकार रूप से रहती है। उसी प्रकार से परमतत्व प्राप्त पुरुष की गति तो कोई साधक पुरुष ही जान सकता है क्योंकि दोनों का साधन और साध्य एक ही है। एक तो सिद्ध हो चुका है दूसरा प्रयत्नशील है। सिद्ध तो मार्ग को जान चुका है। अन्य लोग तो केवल व्यवहार में कभी–कभी तत्सम्बन्धी बातें ही करके संतोष कर लेते हैं।

–साभार 'जम्भसागर'

संपादकीय

x#cãk x#fo".kx#nok eg'oj%

भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं आध्यात्म को लेकर अनेकों विद्वान फरमाते हैं कि यदि हम यह खोजने के लिए संसार पर अपनी नजर दौड़ाएं कि वह कौन-सा देश है, जो प्रकृति की समस्त संपदा, शक्ति, सभ्यता, संस्कृति, आध्यात्म और सौंदर्य से सम्पन्न है और कहीं-कहीं तो पृथ्वी पर मानो स्वर्ग सा ही है। तो हम केवल और केवल भारत की ओर ही संकेत करेंगे। वो इसलिए कि पूरे विश्व में भारत की यह तस्वीर आध्यात्म गुरुओं एवं महान महापुरुषों की बदौलत ही है। उन्हीं के तप, साधना एवं शिक्षा के कारण ही भारत को विश्व गुरु का दर्जा मिला है।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा, शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव।

अत: गुरु अगर पहुंचा हुआ हो और शिष्य सच्चे हृदय से आज्ञापालन करने वाला हो तो शिष्य का उद्धार होने में कोई सन्देह नहीं है। किन्तु गुरु वास्तविक होगा तभी कल्याण होगा। वास्तविक गुरु वही होता है जो हृदय से हमारा कल्याण चाहता है। गुरु को तो भगवान से भी बढ़कर माना गया है। तभी तो कहते हैं कि-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अर्थात् गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही महेश है, ऐसे गुरु के सामने मैं नतमस्तक होती हूं, जो साक्षात् रूप से सृष्टि सृजनहार के दर्शन करवाते हैं। गुरु-शिष्य परंपरा आस्थाओं एवं भावनाओं के मिलने का प्रतीक है। गुरु के बिना उद्धार असम्भव है। रामायण में कहा भी है-

'गुर बिनु भव निधि तरई न कोई, जो बिरंचि संकर सम होई।

अर्थात् बिना गुरु के भले ही कोई ब्रह्मा या शंकर के समान क्यों न हो, भवसागर इस नश्वर जीवन से नहीं तर सकता, यानी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु उस मोमबत्ती की भांति है जो स्वयं को जलाकर अपने शिष्यों को प्रकाश का रास्ता दिखाता है। यदि अतीत में झांकें तो वशिष्ठ-राम, द्रोण-एकलव्य, द्रोण-अर्जुन आदि जैसे गुरु -शिष्यों के अनेक उदाहरण सामने आते हैं जिनमें गुरु का अपने शिष्यों के प्रति अगाध प्रेम तथा शिष्यों की गुरु के प्रति आदर एवं त्याग की असीम भावना स्वयं ही झलकती है। **'गुरु आप संतोषी अवारां पोखी, तंत महारस बाणी'**।

गुरु आप तो स्वयं संतोषी है। अर्थात् कभी किसी से कुछ भी लेने की इच्छा नहीं रखते क्योंकि वह तो सम्पूर्ण जीवों का पालन-पोषण करने वाले हैं। यही सच्चा त्याग होता है एवं यही गुरु महिमा है। गुरु बिन व्यक्ति का जीवन अधूरा है। गुरु के सहयोग से ही हर व्यक्ति सफल बनता है। इसलिए गुरु जम्भेश्वर महाराज ने सबद में कहा भी है-

गुरु ध्याई रे ज्ञानी तोड़त मोहा, अति खुरसाणी छीजत लोहा।
पाणी छल तेरी खाल पखाला, सतगुरु तोड़े मन का साला॥

इसलिए ज्ञानी गुरु का ध्यान कर वह तेरे मोह का बन्धन तोड़ देगा, जिस प्रकार से खुरसाणी पत्थर कठोर लोहे के लगे जंग रूपी मैल को काट देता है। उसे शुद्ध पवित्र कर देता है। ठीक उसी प्रकार से ही तुम्हारे जंग रूपी मोह को सतगुरु ही काट सकते हैं। ये जो तेरा पंचतत्व से बना भौतिक शरीर है इसमें अज्ञान भरा हुआ है। तेरे मानसिक दु:खों को सतगुरु ही मिटा सकता है। इसलिए गुरु महिमा अनंत है।

सतगुरु मिलियो सतपंथ बतायो भ्रान्त चुकाई।

साखी

ऊदोजी कृत कणां की साखी

जुमलै जुलिकै जाइये, जो दिल जुमलै होय।1।
ज्ञान सरोवर न्हाइये, दिल का कषमल खोय।2।
जुमलै सोहै साल्हिया, काबरियां जुमलै कांय।3।
काबरियां जुमलै आवियां, जो आया तो कांय।4।
जो आया तो कांय ही कहै, लीया बाद विराम।5।
काबरियां जुमलै ना आवही, रैस्यां जागरि जांहवै।6।
फीडा घातै गाफल पायचा, ठए ठए पांव ठहाय।7।
खांघी बांधै गाफल पागड़ी, निरखत चालै छांय।8।
घात कुसटि मां गेंडियो, वै बड़ी नखरि कराय।9।
मोमिण देखे आवंता, श्वान ज्यूं घुरराय।10।
जे कोई बोले सांम हो, दाझी रहै मन मांहि।11।
दीन्ही सीख न मांन ही, कावल ही मांना हि।12।
कांयरे गाफिल पांतरियो, तूं सबद गुरु का मान।13।
गुरु का सबद न मांन ही, अंतरा दोरै जाय।14।
गुरु का कहियो जे करै, सुपहा सुरग लहाय।15।
निंव चालो खिंव बोलणो, एकण मरण मराय।16।
देवजी थारै नांव नै, जिंद करूं कुरवांण।17।
पहलै हिंदू सिरजियां, पीछे मुसलमान।18।
मुसलमानां हिंदवां, रोजी देह रहमाण।19।
हिन्दू बाचै पोथियां, मुसलमान कुराण।20।
नारिसिंघ नर देवता, ढ़ोयो सुरग विवांण।21।
जिहिं चढ़ि मोमिण लांघियां, भुंयजल सो असमांणि।22।
पटो अमर लिखावियो, देव तणै दीवाणि।23।
मोमिण सुरगे नावड़या, करि पूरो परवाणि।24।
मरौ न जरो न तेज रो, चुकौ आवाजांणि।25।
सुख अनेरा भोगवे, दुखी न सुणियो कोय।26।
ऊदौ बोलै बीणती, सुरां मिलावौ मोहि।27।

भावार्थ- जुमलै जागरण या सत्संग में मिलकर अवश्य ही जाना चाहिये। सत्संग के प्रति प्रेम श्रद्धा हो तभी प्रेम पूर्वक जायें और ध्यान लगाकर बैठें और श्रवण करो तभी जाने का फल है।1। वहां पर जाकर ज्ञान रूपी तालाब में स्नान कीजिये और मन वचन एवं शरीर से पापों को धो डालिये।2। जागरण में आये हुए साल्हिया यानि सुलझे हुए सज्जन व्यक्ति ही शोभायमान होते है। काबरियां अर्थात जो अधूरे जिन्होनें कुछ बातें तो याद कर ली है किन्तु अब तक उन्हें अधूरा ज्ञान है। नास्तिक विचारधारा के लोग आकर भी तो क्या करेंगे।3। ऐसे काबरियां ज्ञान के अग्राही अहंकारी लोग भी आ जायेंगे तो भी सत्संग में विघ्न ही डालेंगे, व्यर्थ का कुतर्क करेंगे, तथा कौवे की भांति कांय-कांय ही करेंगे।4। वैसे ऐसे व्यक्ति सत्संग में आते ही नहीं है फिर भी आ भी जायेंगे तो व्यर्थ का वाद-विवाद ही करेंगे।5। काबरियां लोग जुमलै में नहीं निभ सकते, उन्हें जुमलै से क्या लेना-देना है, वे तो जहां पर नाच गान अश्लील हरकतें होगी वहीं पर ही जायेंगे।6। उस समय की प्रचलित रहन-सहन की विकृति पर कवि कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि जूतों को फीडा-मरोड़ करके पहनते है फिर बड़े ही अहंकार के साथ गर्व पूर्वक एक-एक पैर आगे उठाकर रखते हैं। ऐसा जताते हैं कि हमारे समान सुन्दर चलने वाला ओर कोई नहीं है।7। पगड़ी को टेढ़ी करके बांधते हैं यानि एक तरफ झुकाकर बांधना अपनी शान समझते हैं और फिर अपनी ही छाया स्वयं देखते हुए चलते है।8। कुछट में चुंटिया दबाकर यानि बेंत बगल में दबाकर वे लोग बड़े ही नखरे के साथ चलते हैं और बड़ी ही क्रोध भरी नजरों से दूसरों को देखते हैं।9। यदि उनके सामने कोई सज्जन भक्त आता हुआ दिखाई दे जाता है तो कुते की भांति घुरराता है। काटने को दौड़ पड़ता है।10। यदि कोई उन्हें अच्छी शिक्षा देता है, शांति की वार्ता कहता है तो मन ही मन जल उठता है। आग लग जाती है।11। सतगुरु की दी हुई शिक्षा तो मानेगा नहीं उल्टा ही चलेगा और विपरीत कार्य ही करेगा।12। रे गाफिल! तूं क्यों भूल गया, गुरु का शब्द क्यों नहीं मानता।13। यदि गुरु का शब्द नहीं मानेगा तो अन्त में दौरे नरक में गिरेगा।14। यदि गुरु का कहना मानेगा तो सुमार्ग में चलकर अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति करेगा।15। इसलिये हे मानव! नम्रता पूर्वक व्यवहार

करते हुए अपना जीवन यापन करो।16। समर्पण भाव से सभी कुछ परमात्मा के ही अर्पित करके अपने जिद को, मन के हठ की कुर्बानी दे दीजिये।17। परमात्मा के लिये तो सभी समान है। सृष्टि आदि में प्रथम हिन्दू की ही सृजना हुई थी, तथा बाद में मुसलमान की रचना भी उसी परमात्मा ने की थी।18। चाहे मुसलमान हो या हिन्दू सभी का पालन पोषण करने वाले तो वही विष्णु ही हैं।19। हिन्दू वेद शास्त्र आदि पोथी पढ़ते हैं और मुसलमान कुराण पढ़ते हैं।20। वही विष्णु ही कभी नृसिंह रूप धारण करते है वे नरों के देवता है। उन्होनें ही इस बार ज्ञान ध्यान नियम धर्म रूपी बेड़ा भेजा है ये स्वयं लेकर आये हैं।21। जो भी इस बेड़े पर सवार हो जायेगा वह तो संसार सागर से पार उतर जायेगा और वैकुण्ठ लोक का निवासी होगा।22। वहां पर तो अमर पट्टा लिखा जायेगा। वहां से कभी भी वापिस आना नहीं होगा, सदा के लिये वहीं पर निवास हो जायेगा।23। जो भक्त लोग थे वे तो स्वर्ग में पहुंच चुके है क्योंकि उन्होनें यहां से धर्म-कर्म को प्रमाण रूप से साथ लिया था।24। वहां पर न तो मृत्यु ही है, न ही बुढ़ापा है और न ही व्याधि आदि कष्ट भी है। जन्म मृत्यु के चक्कर से सदा के लिये छूट जायेगा।25। वहां वैकुण्ठ धाम में अनुपम सुख भोग मिलेगा। वहां पर किसी को दुखी न तो देखा गया और न ही सुना गया है।26। ऊदोजी विनती करते हुए कहते है कि हे प्रभु! मुझे भी आप कृपा करके देवताओं से मिला दीजिये। जहां पर जाने से सभी कुछ सुलभ हो जायेगा।27।

-भावार्थ प्रकाश

माँ

माँ क्या होती है?

इस शब्द की व्याख्या तो स्वयं ईश्वर भी न कर सके, तो मैं क्या चीज हूँ। पर इतना जानती हूँ कि माँ वो है, जो अपने बच्चे को नौ माह गर्भ के नरक से निकालने के लिए पल-पल तड़पती है तथा इस दुनिया में लाकर उसे संस्कार और प्रेम देकर सद्मार्ग से स्वर्ग दिखाती है। वही बच्चे उसी माँ को दुत्कारते हैं और बोझ समझते हैं। हम माँ की मूर्ति को तो बड़ी श्रद्धा से पूजते हैं, पर जीती-जागती माँ को नरक भोगने पर मजबूर कर देते हैं। लोग कहते हैं कि माँ में स्वर्ग होता है तो फिर क्यों उस माँ को नर्क भोगना पड़ता है।

-श्रीमती संगीता सुनील बिश्नोई
गाडरवारा, जिला-नरसिंहपुर (म.प्र.)

मोक्ष के नाम पर

मैं मोक्ष नहीं, हर बार
मृत्यु चाहता हूँ क्योंकि,
मोक्ष दिलवाने में
बिचौलिए होते हैं।
जबकि मृत्यु तो
नितांत अकेली आती है।
स्वर्ग और मोक्ष का
बाजार बहुत बड़ा है।
जिसमें भीड़ बहुत है,
झांसे बहुत हैं,
जिस्मों की भूख बहुत है।
मैं जीवन से भागना नहीं
चाहता, बार-बार आना
चाहता हूँ धरती पर।
जूझना चाहता हूँ धरती
पर उग आये नर्क से,
जिसे पैदा किया गया है
मोक्ष और स्वर्ग के नाम पर।

-सुरेन्द्र सुन्दरम
श्रीगंगानगर
मो.: 9414246712

कलयुग केवल 'नाम' अधारा, सुमर-सुमर नर उतरे पारा

कलियुग के समान दूसरा युग नहीं है, क्योंकि इस युग में श्री रामजी के निर्मल गुणसमूहों को गा-गाकर, चिंतन एवं मनन करके (Perception) मनुष्य बिना ही परिश्रम संसार रूपी समुद्र से तर जाता है।

कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ॥

भावार्थ- कलियुग के पापों ने सब धर्मों को ग्रस लिया, सद्‌ग्रंथ लुप्त हो गए, दम्भियों ने अपनी बुद्धि से कल्पना करके बहुत से पंथ प्रकट कर दिए।

भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउँ कछुक कलिधर्म॥

भावार्थ- सभी लोग मोह के वश हो गए, शुभ कर्मों को लोभ ने हड़प लिया। हे ज्ञान के भंडार! हे श्री हरि के वाहन! सुनिए, अब मैं कलि के कुछ धर्म कहता हूँ।

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति बिरोध रत सब नर नारी।
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। कोउ नहिं मान निगम अनुसासन॥

भावार्थ- कलियुग में न वर्णधर्म रहता है, न चारों आश्रम रहते हैं। सब पुरुष-स्त्री वेद के विरोध में लगे रहते हैं। ब्राह्मण वेदों के बेचने वाले और राजा प्रजा को खा डालने वाले होते हैं। वेद की आज्ञा कोई नहीं मानता।

मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा।
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई। ता कहुँ संत कहइ सब कोई॥

भावार्थ- जिसको जो अच्छा लग जाए, वही मार्ग है। जो डींग मारता है, वही पंडित है। जो मिथ्या आरंभ करता (आडंबर रचता) है और जो दंभ में रत है, उसी को सब कोई संत कहते हैं।

सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी।
जो कह झूँठ मसखरी जाना। कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना॥

भावार्थ- जो (जिस किसी प्रकार से) दूसरे का धन हरण कर ले, वही बुद्धिमान है। जो दंभ करता है, वही बड़ा आचारी है। जो झूठ बोलता है और हँसी-दिल्लगी करना जानता है, कलियुग में वही गुणवान कहा जाता है।

निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी।
जाकें नख अरु जटा बिसाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥

भावार्थ- जो आचारहीन है और वेदमार्ग को छोड़े हुए हैं, कलियुग में वही ज्ञानी और वही वैराग्यवान है। जिसके बड़े-बड़े नख और लंबी-लंबी जटाएँ हैं, वही कलियुग में प्रसिद्ध तपस्वी है।

असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं॥

भावार्थ- जो अमंगल वेष और अमंगल भूषण धारण करते हैं और भक्ष्य-भक्ष्य (खाने योग्य और न खाने योग्य) सब कुछ खा लेते हैं वे ही योगी हैं, वे ही सिद्ध हैं और वे ही मनुष्य कलियुग में पूज्य हैं।

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ॥

भावार्थ- जिनके आचरण दूसरों का अपकार (अहित) करने वाले हैं, उन्हीं का बड़ा गौरव होता है और वे ही सम्मान के योग्य होते हैं। जो मन, वचन और कर्म से लबार (झूठ बकने वाले) हैं, वे ही कलियुग में वक्ता माने जाते हैं।

नारि बिबस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नट मर्कट की नाईं।
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना। मेल जनेऊ लेहिं कुदाना॥

भावार्थ- हे गोसाई! सभी मनुष्य स्त्रियों के विशेष वश में हैं और बाजीगर के बंदर की तरह (उनके नचाए) नाचते हैं। ब्राह्मणों को शूद्र ज्ञानोपदेश करते हैं और गले में जनेऊ डालकर कुत्सित दान लेते हैं।

सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी।
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि पर पुरुष अभागी॥

भावार्थ- सभी पुरुष काम और लोभ में तत्पर और क्रोधी होते हैं। देवता, ब्राह्मण, वेद और संतों के विरोधी होते हैं।

अभागिनी स्त्रियाँ गुणों के धाम सुंदर पति को छोड़कर पर पुरुष का सेवन करती हैं।

सौभागिनीं बिभूषन हीना। बिधवन्ह के सिंगार नबीना। गुर सिष बधिर अंध का लेखा। एक न सुनइ एक नहिं देखा॥

भावार्थ– सुहागिनी स्त्रियाँ तो आभूषणों से रहित होती हैं, पर विधवाओं के नित्य नए श्रृंगार होते हैं। शिष्य और गुरु में बहरे और अंधे का सा हिसाब होता है। एक (शिष्य) गुरु के उपदेश को सुनता नहीं, एक (गुरु) देखता नहीं (उसे ज्ञान दृष्टि) प्राप्त नहीं है।

हरइ सिष्य धन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महुँ परई। मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं। उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं॥

भावार्थ– जो गुरु शिष्य का धन हरण करता है, पर शोक नहीं हरण करता, वह घोर नरक में पड़ता है। माता-पिता बालकों को बुलाकर वही धर्म सिखलाते हैं, जिससे पेट भरे।

ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात॥

भावार्थ– स्त्री-पुरुष ब्रह्मज्ञान के सिवा दूसरी बात नहीं करते, पर वे लोभवश कौड़ियों (बहुत थोड़े लाभ) के लिए ब्राह्मण और गुरु की हत्या कर डालते हैं।

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि।
जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर आँखि देखावहिं डाटि॥

भावार्थ– शूद्र ब्राह्मणों से विवाद करते हैं (और कहते हैं) कि हम क्या तुमसे कुछ कम हैं? जो ब्रह्म को जानता है वही श्रेष्ठ ब्राह्मण है। ऐसा कहकर वे उन्हें डाँटकर आँखें दिखलाते हैं।

पर त्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने। तेइ अभेदबादी ग्यानी नर। देखा मैं चरित्र कलिजुग कर॥

भावार्थ– जो पराई स्त्री में आसक्त, कपट करने में चतुर और मोह, द्रोह और ममता में लिपटे हुए हैं, वे ही मनुष्य अभेदवादी (ब्रह्म और जीव को एक बताने वाले) ज्ञानी हैं। मैंने उस कलियुग का यह चरित्र देखा।

आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं। जे कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं।
कल्प कल्प भरि एक एक नरका। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका॥

भावार्थ– वे स्वयं तो नष्ट हुए ही रहते हैं, जो कहीं सन्मार्ग का प्रतिपालन करते हैं, उनको भी वे नष्ट कर देते हैं। जो तर्क करके वेद की निंदा करते हैं, वे लोग कल्प-कल्पभर एक-एक नरक में पड़े रहते हैं।

जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा।
पनारि मुई गृह संपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी॥

भावार्थ– तेली, कुम्हार, चाण्डाल, भील, कोल और कलवार आदि जो वर्ण में नीचे हैं, स्त्री के मरने पर अथवा घर की संपत्ति नष्ट हो जाने पर सिर मुँड़ाकर संन्यासी हो जाते हैं।

ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं।
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी॥

भावार्थ– वे अपने को ब्राह्मणों से पुजवाते हैं और अपने ही हाथों दोनों लोक नष्ट करते हैं। ब्राह्मण अपढ़, लोभी, कामी, आचारहीन, मूर्ख और नीची जाति की व्यभिचारिणी स्त्रियों के स्वामी होते हैं।

सूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना। सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न बरनि अनीति अपारा॥

भावार्थ– शूद्र नाना प्रकार के जप, तप और व्रत करते हैं तथा ऊँचे आसन (व्यास गद्दी) पर बैठकर पुराण कहते हैं। सब मनुष्य मनमाना आचरण करते हैं। अपार अनीति का वर्णन नहीं किया जा सकता।

भए बरन संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग॥

भावार्थ– कलियुग में सब लोग वर्णसंकर और मर्यादा से च्युत हो गए। वे पाप करते हैं और (उनके फलस्वरूप) दुःख, भय, रोग, शोक और (प्रिय वस्तु का) वियोग पाते हैं।

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक।
तेहिं न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक॥

भावार्थ– वेद सम्मत तथा वैराग्य और ज्ञान से युक्त जो हरिभक्ति का मार्ग है, मोहवश मनुष्य उस पर नहीं चलते और अनेकों नए-नए पंथों की कल्पना करते हैं।

बहु दाम सँवारहिं धाम जती। बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती।

तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलि कौतुक तात न जात कही॥

भावार्थ- संन्यासी बहुत धन लगाकर घर सजाते हैं। उनमें वैराग्य नहीं रहा, उसे विषयों ने हर लिया। तपस्वी धनवान हो गए और गृहस्थ दरिद्र। हे तात! कलियुग संत लीला कुछ कही नहीं जाती।

कुलवंति निकारहिं नारि सती। गृह आनहिं चेरि निबेरि गती।
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं। अबलानन दीख नहीं जब लौं॥

भावार्थ- कुलवती और सती स्त्री को पुरुष घर से निकाल देते हैं और अच्छी चाल को छोड़कर घर में दासी को ला रखते हैं। पुत्र अपने माता-पिता को तभी तक मानते हैं, जब तक स्त्री का मुँह नहीं दिखाई पड़ता।

ससुरारि पिआरि लगी जब तें। रिपुरूप कुटुंब भए तब तें।
नृप पाप परायन धर्म नहीं। करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं॥

भावार्थ- जब से ससुराल प्यारी लगने लगी, तब से कुटुम्बी शत्रु रूप हो गए। राजा लोग पाप परायण हो गए, उनमें धर्म नहीं रहा। चिन्तन प्रजा को नित्य ही (बिना अपराध) दंड देकर उसकी विडंबना (दुर्दशा) किया करते हैं।

धनवंत कुलीन मलीन अपी। द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी।
नहिं मान पुरान न बेदहि जो। हरि सेवक संत सही कलि सो॥

भावार्थ- धनी लोग मलिन (नीच जाति के) होने पर भी कुलीन माने जाते हैं। द्विज का चिह्न जनेऊ मात्र रह गया और नंगे बदन रहना तपस्वी का। जो वेदों और पुराणों को नहीं मानते, कलियुग में वे ही हरिभक्त और सच्चे संत कहलाते हैं।

कबि बृंद उदार दुनी न सुनी। गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी।
कलि बारहिं बार दुकाल परै। बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै॥

भावार्थ- कवियों के तो झुंड हो गए, पर दुनिया में उदार (कवियों का आश्रयदाता) सुनाई नहीं पड़ता। गुण में दोष लगाने वाले बहुत हैं, पर गुणी कोई भी नहीं। कलियुग में बार-बार अकाल पड़ते हैं। अन्न के बिना सब लोग दु:खी होकर मरते हैं।

सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड॥

भावार्थ- हे पक्षीराज गरुड़जी! सुनिए कलियुग में कपट, हठ (दुराग्रह), दम्भ, द्वेष, पाखंड, मान, मोह और काम आदि (अर्थात् काम, क्रोध और लोभ) और मद ब्रह्माण्डभर में व्याप्त हो गए (छा गए)।

तामस धर्म करिहिं नर जप तप ब्रत मख दान।
देव न बरषहिं धरनी बए न जामहिं धान॥

भावार्थ- मनुष्य जप, तप, यज्ञ, व्रत और दान आदि धर्म तामसी भाव से करने लगे। देवता (इंद्र) पृथ्वी पर जल नहीं बरसाते और बोया हुआ अन्न उगता नहीं।

अबला कच भूषन भूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा।
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता। मति थोरि कठोरि न कोमलता॥

भावार्थ- स्त्रियों के बाल ही भूषण हैं (उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं रह गया) और उनको भूख बहुत लगती है (अर्थात् वे सदा अतृप्त ही रहती हैं)। वे धनहीन और बहुत प्रकार की ममता होने के कारण दु:खी रहती हैं। वे मूर्ख सुख चाहती हैं, पर धर्म में उनका प्रेम नहीं है। बुद्धि थोड़ी है और कठोर है, उनमें कोमलता नहीं है।

नर पीड़ित रोग न भोग कहीं। अभिमान बिरोध अकारनहीं।
लघु जीवन संबदु पंच दसा। कलपांत न नास गुमानु असा॥

भावार्थ- मनुष्य रोगों से पीड़ित हैं, भोग (सुख) कहीं नहीं है। बिना ही कारण अभिमान और विरोध करते हैं। दस-पाँच वर्ष का थोड़ा सा जीवन है, परंतु घमंड ऐसा है मानो कल्पांत (प्रलय) होने पर भी उनका नाश नहीं होगा।

कलिकाल बिहाल किए मनुजा। नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा।
नहिं तोष बिचार न सीतलता। सब जाति कुजाति भए मंगता॥

भावार्थ- कलिकाल ने मनुष्य को बेहाल (अस्त-व्यस्त) कर डाला। कोई बहिन-बेटी का भी विचार नहीं करता। (लोगों में) न संतोष है, न विवेक है और न शीतलता है। जाति, कुजाति सभी लोग भीख माँगने वाले हो गए।

इरिषा परुषाच्छर लोलुपता। भरि पूरि रही समता बिगता।
सब लोग बियोग बिसोक हए। बरनाश्रम धर्म अचार गए॥

भावार्थ- ईर्षा (डाह), कडुवे वचन और लालच भरपूर हो रहे हैं, समता चली गई। सब लोग वियोग और विशेष शोक से मरे पड़े हैं। वर्णाश्रम धर्म के आचरण नष्ट हो गए।

दम दान दया नहिं जानपनी। जड़ता परबंचनताति घनी।
तनु पोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक जे जग मो बगरे॥

भावार्थ- इंद्रियों का दमन, दान, दया और समझदारी किसी में नहीं रही। मूर्खता और दूसरों को ठगना, यह बहुत अधिक बढ़ गया। स्त्री-पुरुष सभी शरीर के ही पालन-पोषण में लगे रहते हैं। जो पराई निंदा करने वाले हैं, जगत में वे ही फैले हैं।

सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार।
गुनउ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार॥

भावार्थ- हे सर्पों के शत्रु गरुड़जी! सुनिए, कलिकाल पाप और अवगुणों का घर है, किंतु कलियुग में एक गुण भी बड़ा है कि उसमें बिना ही परिश्रम भवबंधन से छुटकारा मिल जाता है।

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग॥

भावार्थ- सत्ययुग, त्रेता और द्वापर में जो गति पूजा, यज्ञ और योग से प्राप्त होती है, कलियुग वही गति कलियुग में लोग केवल भगवान् के नाम से पा जाते हैं।

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी। करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी।
त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं। प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं॥

भावार्थ- सत्ययुग में सब योगी और विज्ञानी होते हैं। हरि का ध्यान करके सब प्राणी भवसागर से तर जाते हैं। त्रेता में मनुष्य अनेक प्रकार के यज्ञ करते हैं और सब कर्मों को प्रभु को समर्पण करके भवसागर से पार हो जाते हैं।

द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिं उपाय न दूजा।
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा। गावत नर पावहिं भव थाहा॥

भावार्थ- द्वापर में श्री रघुनाथजी के चरणों की पूजा करके मनुष्य संसार से तर जाते हैं, दूसरा कोई उपाय नहीं है और कलियुग में तो केवल श्री हरि की गुणगाथाओं का गान करने से ही मनुष्य भवसागर की थाह पा जाते हैं।

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना। एक अधार राम गुन गाना।
सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि॥

भावार्थ- कलियुग में न तो योग और यज्ञ है और न ज्ञान ही है। श्री रामजी का गुणगान ही एकमात्र आधार है। अतएव सारे भरोसे त्यागकर जो श्री रामजी को भजता है और प्रेमसहित उनके गुणसमूहों को गाता है।

सोइ भव तर कछु संसय नाहीं। नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं।
कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुन्य होहिं नहिं पापा॥

भावार्थ- वही भवसागर से तर जाता है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। नाम का प्रताप कलियुग में प्रत्यक्ष है। कलियुग का एक पवित्र प्रताप (महिमा) है कि मानसिक पुण्य तो होते हैं, पर (मानसिक) पाप नहीं होते।

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास॥

भावार्थ- यदि मनुष्य विश्वास करे, तो कलियुग के समान दूसरा युग नहीं है, (क्योंकि) इस युग में श्री रामजी के निर्मल गुणसमूहों को गा-गाकर मनुष्य बिना ही परिश्रम संसार (रूपी समुद्र) से तर जाता है।

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान॥

भावार्थ- धर्म के चार चरण (सत्य, दया, तप और दान) प्रसिद्ध हैं, जिनमें से कलि में एक (दान रूपी) चरण ही प्रधान है। जिस किसी प्रकार से भी दिए जाने पर दान कल्याण ही करता है।

भवसागर से पार होने के लिये मनुष्य शरीर रूपी सुन्दर नौका मिल गई है। सतर्क रहो कहीं ऐसा न हो कि वासना की भँवर में पड़कर नौका डूब जाय। अपने अन्त:करण में परोपकार की पवित्र भावना उत्पन्न करने के लिए गाय का दूध पीएं, मक्खन, घृत, ऋतु फल खाये, सूखे मेवे, शहद, गन्ना एवं जैविक खाद से उत्पन्न अन्न (सत्व गुण युक्त) खायें जिससे आपका मन दैविक विचार उत्पन्न करे। आप भाग्यशाली हैं कि ये ज्ञान (पवित्र गीता अध्याय 14 वर्णित 'सृष्टि त्रिगुणात्मक = सत्व, रज, तामस) केवल सनातन धर्म के पवित्र ग्रंथों में लिपिबद्ध है। दुनिया के और किसी धर्म के पास नहीं है। अत: अपने आपको गौरवांवित महसूस करें। इस प्रकार आप नरक जाने से बच सकते हैं।

स्वयं कमाओ, स्वयं खाओ यह प्रकृति है । (रजो गुण)
दूसरा कमाए, तुम छीन कर खाओ यह विकृती है। (तमो गुण)
स्वयं कमाओ सबको खिलाओ, यह दैविक संस्कृति है।

(सतो गुण) 'देविक प्रवृतियों को धारण करे तभी आप देवलोक पाने के अधिकारी बनेंगे'

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषया,
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्।
व्रजन्तः स्वातंर्त्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्ता ह्ये शमसुखमनन्तं विदधति॥

भावार्थ– सांसारिक विषय एक दिन हमारा साथ छोड़ देंगे, यह एकदम सत्य है। उन्होंने हमको छोड़ा या हमने उन्हें छोड़ा, इसमें क्या भेद है? दोनों एक बराबर हैं। अतएव सज्जन पुरुष स्वयं उनको त्याग देते हैं। स्वयं छोड़ने में ही सच्चा सुख है, बड़ी शान्ति प्राप्त होती है।

हमेशा ध्यान में रखिये–

'आप एक शुद्ध चेतना है यानि स्व ऊर्जा से प्रकाशित आत्मा! माया (अज्ञान) ने आपकी आत्मा के शुद्ध स्वरूप को छीन रखा है! अतः माया (अज्ञान) से पीछा छुड़ाइये और शुद्ध चेतना को प्राप्त कर परमानन्द का सुख भोगिए!

सत्कर्म करते रहना ही सही अर्थों में, जीवन से प्रेम, है!

मंगलकामना: प्रभु आपके जीवन से अन्धकार (अज्ञान) को मिटायें एवं प्रकाश (ज्ञान) से भर दें!

(मनुष्य पद की गरिमा को क्यों खोता है और उसके क्या परिणाम होते है?

उत्तर– मनुष्य पद की गरिमा को तामसिक प्रवृतियों (वासना, लालच एवं अहंकार) के आधीन होने के कारण खोता है! पवित्र गीता के अनुसार ये प्रवृतियां नरक का द्वार है! हमारे मत में ये प्रवृतियां हमारे जीवन में तामस के उदय का आरम्भ है और यही तामस मानवों के जीवन में अज्ञानता, जड़ता एवं मूढ़ता के उदय का कारण है जो हमें नरक लोक ले जाने में सक्षम है! अतः भ्रष्टाचार से बचो यानि पद की गरिमा को मत खोओ! कोई भी पद या सम्मान (गरिमा) इस जन्म में (पूर्व में संचित) पुण्य कर्मों की देन है! पुण्य कर्मों के ह्यास के साथ ही गरिमा भी समाप्त हो जाती है और मानव को फिर अनेक योनियों में भटकना पड़ता है।

धर्मशील व्यक्ति–

जिमि सरिता सागर महँ जाहीं।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये।
धर्मशील पहँ जाइ सुहाये॥

जैसे सरिता (नदी) उबड–खाबड़, पथरीले स्थानों को पार करते हुए पूर्ण रूपेण निष्काम भाव से समुद्र में जा मिलती है, उसी प्रकार धर्म–रथ पर आसीन मनुष्य के पास उसके न चाहते हुए भी समस्त सुख–सम्पत्ति, रिद्धियाँ–सिद्धियाँ स्वतरू आ जाती हैं, सत्य तो यह है कि वे उसकी दासिता ग्रहण करने के लिए लालायित रहती है।

सच्चे संतों की वाणी से अमृत बरसता है, आवश्यकता है.. उसे आचरण में उतारने की....

जिस प्रकार मैले दर्पण में सूर्य देव का प्रकाश नहीं पड़ता है उसी प्रकार मलिन अंत:करण में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता है अर्थात् मलिन अंत:करण में शैतान अथवा असुरों का राज होता है। अतः ऐसा मनुष्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त 'दिव्य दृष्टि' या दूरदृष्टि का अधिकारी नहीं बन सकता एवं अनेकों दिव्य सिद्धियों एवं निधियों को प्राप्त नहीं कर पाता या खो देता है।

किसी भी गौशाला में दान देकर गौवंश को बचाये और देवताओं का आशीर्वाद एवं कृपा प्राप्त करें। साथ ही अपने प्रारब्ध (भाग्य) में पुण्य संचित करें। यह एक ऐसा पुण्य है जिससे इहलोक में देवताओं से सुख समृद्धि मिलती है एवं परलोक में स्वर्ग।

'जीवन का सत्य आत्मिक कल्याण है ना की भौतिक सुख!'

'सत्य वचन में प्रीति करले,सत्य वचन प्रभु वास।
सत्य के साथ प्रभु चलते हैं, सत्य चले प्रभु साथ॥'

'एक माटी का दिया सारी रात अंधियारे से लड़ता है,
तू तो प्रभु का दिया है फिर किस बात से डरता है...'

हे मानव तू उठ और सागर (प्रभु) में विलीन होने के लिए पुरुषार्थ कर...। शरीर परमात्मा का दिया हुआ उपहार है। चाहो तो इससे 'विभूतियां' (अच्छाइयां/पुण्य इत्यादि) अर्जित करलो चाहे घोरतम 'दुर्गति' (बुराइयां/पाप) इत्यादि। परोपकारी बनो एवं प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करो। प्रभु हर जीव में चेतना रूप में विद्यमान है, अतः प्राणियों से प्रेम करो।

–नारायण राम जांगू बिश्नोई
फतेहसागर लोहावट (फलोदी)
मो.: 8619520326

गुरू जाम्भोजी की सबदवाणी में 'ओ३म्' एवं 'ओ३म् स्वाहा'

'ओ३म्' और 'ओ३म् स्वाहा' दोनों ही अग्नि से सम्बन्धित है। बिश्नोई समाज ओर आर्य समाज का अधिक जोर यज्ञ पर ही है। दोनों ही नियमित यज्ञ करते हैं। बिश्नोई जाम्भोजी के शब्दों का उच्चारण करके यज्ञ करते हैं। जब से सबदवाणी प्रकाशित हुई, इसका महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। बिश्नोई यज्ञ करते समय सबदवाणी का सस्वर पाठ करते हैं। विष्णु का जप करते 'ओ३म् विष्णु' जपते हैं। यज्ञ के समय भी सबद के अंत में 'ओ३म् स्वाहा' बोलते हैं। प्रकाशित सबदवाणियों में सबद के प्रारम्भ में 'ओ३म्' भी लिखा मिलता है। लेकिन 'ओ३म्' लिखा हुआ ही है, ओ३म् बोल कर सबद नहीं बोलते हैं। इसी तरह सबद के अंत में 'ओ३म् स्वाहा' लिखा नहीं है, लेकिन सबद के अंत में 'ओ३म् स्वाहा' बोलते हैं। मेरे विचार में यह सब प्रभाव आर्य समाज के कारण ही है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी बिश्नोइयों के क्षेत्र मुरादाबाद में भी कई यात्राएं की थी। आओ सब हम 'ओ३म्' और 'ओ३म् स्वाहा' के विषय में जाने।

सबदवाणी में 'ओ३म्' शब्द का प्रवेश 'प्रथमत् एवं अंत में' इस बात पर विचार करें, इससे पूर्व हम जान लें कि 'ओ३म्' शब्द है, क्या? 'ओ३म्' में 'अ' ब्रह्म का वाचक है, 'उ' विष्णु का ओर 'म' रुद्र का। दुनिया में नम्बर का मंत्र कौन-सा है? उत्तर है- '**ओ३म् भूर्भवः स्वः तत्तवितुवेण्यं भर्गों देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्**' है। ओ३म् वह आदि ध्वनि है, जिससे ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ। ओ३म् त्रिगुणात्मक है। ओ३म् का वैज्ञानिक अर्थ त्रिगुणात्मक प्रकृति है। 34 बीज मंत्र है, शब्द ब्रह्म है, सृष्टि का प्रथम उद्घोष है। यह प्रत्येक शब्द के पीछे मंत्र के मूल में। अंकार, उकार, मकार के बिना कोई मंत्र पूरा नहीं होता है।

कुछ मान्यताओं के अनुसार ॐ की उत्पत्ति शिव के मुख से हुई। हालांकि ऋग्वेद और यजुर्वेद से लेकर कई उपनिषदों में 'ॐ' का जिक्र मिलता है। मडूकोपनिषद् में कहा है, संसार में भूत, भविष्य और वर्तमान, काल में एवं इनसे परे भी 'ॐ' मौजूद है, यानि ओ३म् ब्रह्माण्ड में हमेशा से था, और रहेगा। ॐ का दूसरा नाम प्रवण (परमेश्वर) है।

'ओ३म्' अग्नि मीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवभृत्विजम् ऋग्वेद का प्रथम मंत्र है। यह मंत्र अग्नि देवता की स्तुति में है। वेद हिन्दू धर्म का प्रथम ग्रंथ माना गया है। इसलिए ही ओ३म् को हिन्दू धर्म में पवित्र और शक्ति का प्रतीक माना गया है। यह मंत्र जप्प को प्रभावशाली और शुद्ध बनाता है। धार्मिक ग्रंथों और महंतों के अनुसार 'ॐ' की ध्वनि सकारात्मक ऊर्जा और शान्ति प्रदान करती है। 'ॐ' ब्रह्माण्ड का नाम है एवं मनुष्य के अंतर में ईश्वर का प्रतीक है। हर मंत्र से पहले 'ओ३म्' क्यों- यह सर्वोच्च निरपेक्षता, चेतना, आत्मान, ब्रह्म या ब्रह्माण्डीय दुनिया का सार है। 'ओ३म्' अनिष्टों का समूल नष्ट करने वाला एवं सुख समृद्धि प्रदायक माना जाता है।

तेतरिय उपनिषद्, श्लोक-8 में बताया है- 'ओमित्-येतद्नुकृतिर्ह स्म वा अप्यो श्रावविेत्याश्रावयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओं शोमिति शस्त्राणि शं सन्ति। ओमित्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति। ओमिति। ओमति ब्रह्मा प्रसोति। ओमित्यग्निहोत्रमनुजानाति। ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपन्वानीति। ब्रह्मोवोन्नेति।' अर्थात् ओ३म् यह ब्रह्म है। ओ३म् यह सब कुछ है। ओ३म् यह आज्ञा मानना है। ओ३म् अंगीकार का वाचक है, ओ३म् कहने पर (ऋत्वितज) मंत्र सुनाते हैं। ओ३म् सोम कहकर शास्त्रों (ऋग्वेद प्रार्थना मंत्र विशेष) को पढ़ते हैं। ओ३म् कहकर (सोमयज्ञ में) अध्वर्यु यजुर्वेद प्रतिगर (प्रोत्साहक मंत्र विशेष) पढ़ता है। ओ३म् कहकर ब्रह्मा अनुज्ञा देता है। ओ३म् कहकर अग्निहोत्र की अनुज्ञा देता है। वेद अध्ययन करने वाला ब्राह्मण ओ३म् उच्चारण करता हुआ कहता है- मैं ब्रह्म (वेद) को प्राप्त होऊं और इस प्रकार वह ब्रह्म को अवश्य पा लेता है।

माडूक्य उपनिषद् के मंत्र 1, 8, 12, 28 में भी ओ३म् डाला गया है- 'ओमित्येतदक्षरमिद् सर्व तस्योपव्याख्यानं भूत भवद् भविष्यदिति सर्वमोंकार एवायच्चान्यत् त्रिकालातीतं तद्प्योंकार एव। अर्थात् यह सब कुछ ओ३म् अक्षर है। यह जो कुछ भूत, वर्तमान और भविष्यत् है, सब कुछ उसकी व्याख्या है और जो कुछ तीनों कालों से ऊपर है, वह भी ओंकार ही है।

'सोऽयमात्माध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादा मात्रा मात्राश्च पादा अकार उकारोमकार इति। अर्थात् वह यह आत्मा अक्षर-दृष्टि से मात्राओं वाला ओंकार है। पाद ही मात्रा है, मात्रा ही पाद है। वे मात्राएं अकार, उकार और मकार हैं।

'अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः प्रपश्चोपशमः शिवोहद्वैत एवमोकांर आत्मैव संविशत्यात्मनाडत्मानं य एवं वेद या एवं वेद।' अर्थात् चौथा पाद मात्रा रहित है। उसमें कोई व्यवहार नहीं है, न ही कोई प्रपंच है, वह शिव और अद्वैत है। इस प्रकार ओंकार आत्मा ही है। जो उसे इस प्रकार जानता है, वह आत्मा से आत्मा में प्रवेश कर जाता है।

पातंजलयोग प्रदीप में आता है 'तस्य वाचकः प्रणवा'। अर्थात् उस ईश्वर का बोधक शब्द 'ओ३म्' है। जिस अर्थ का बोधक जो शब्द होता है, वह शब्द उस अर्थ का कहलाता है और जिस वाचक शब्द से जो बोध्य अर्थ होता है, वह अर्थ उस शब्द का वाच्य कहलाता है जैसे- गो (गाय) शब्द वाचक है और सास्ना (गोओं के गले में कम्बल सा लटका हुआ मांस) पुच्छ आदि वाला पशु विशेष वाच्य है। वाचक, बोधक, अभिधायक, संज्ञा, नाम एकार्थक है। इसी प्रकार वाच्य बोध, अभिधेय, संज्ञी नामी भी समानार्थक हैं। भोजवृति में बताया है- 'प्रकर्षेण नूयतेऽनेनेति नौति, स्वौतीतिवा प्रणव ओंकारः।' अर्थात् नम्रता से स्तुति की जाय जिसके द्वारा अथवा भक्त जिसकी उत्तमता से स्तुति करता है, वह 'प्रणव' कहलाता है। वह 'ओ३म्' ही है।

गीता के अध्याय-8 के श्लोक 3 में कृष्ण भगवान कहते हैं-

ओमित्येकाक्षारं ब्रह्म व्यवहान्मामनुस्मरन।
यः प्रयाति त्यजन्देहं य याति परमांगतिम्॥

अर्थात् जो पुरुष 'ॐ' ऐसे इस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ उसके अर्थ स्वरूप परमात्मा का चिंतन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है। ओंकार को सारे मंत्रों का सेतु बतलाया गया है तथा मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए प्रत्येक मंत्र को 'ओ३म्' के साथ उच्चारण किया जाता है।

'ओ३म्' एक पवित्र ध्वनि माना जाता है। इसे अनंत शक्ति का प्रतीक माना जाता है। यह हिन्दू, जैन, बौद्ध एवं सिक्ख धर्मों में पवित्र माना जाता है। ओ३म् शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बनता है-अ उ म। ओ३म् का विश्लेषण-

1. ओ३म् को शान्ति का प्रतीक माना जाता है।
2. ओ३म् को ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का कारण माना जाता है।
3. ओ३म् को परमात्मा या ईश्वर का पहला शब्द माना जाता है।
4. ओ३म् को ब्रह्मा, विष्णु ओर शिव का प्रतीक माना जाता है।
5. ओ३म् से कई मंत्रों की उत्पत्ति हुई है।
6. ओ३म् का उच्चारण करने से शरीर और दिमाग में समन्वय आता है।
7. ओ३म् का उच्चारण करने से सुनने की शक्ति बढ़ती है।
8. ओ३म् का उच्चारण करने से अनेक बीमारियों का अंत होता है।

यहीं पर हम 'ओ३म् स्वाहा' पर विचार करते हैं। ओ३म् स्वाहा 'ओम' मंत्र का अंतिम रूप है। इसका मतलब है कि आप अपने इरादों को सील करके उन्हें सम्मान और आशा के साथ ब्रह्माण्ड में भेज रहे हैं। स्वाहा शब्द का उच्चारण शक्तिशाली कार्य है। 'ओ३म् नमः स्वाहा' - यज्ञ में आहुति अर्पित की जाती है। माना जाता है कि उसे अग्नि देव सब देवताओं तक पहुँचाते हैं, परन्तु ये आहुति अग्नि अपनी पत्नी 'स्वाहा' के द्वारा ग्रहण करते हैं। इसलिए 'ओ३म् नमः स्वाहा' का प्रयोग करते हैं।

अब हम विचार करते हैं कि 'ओ३म्' शब्द सबदवाणी में प्रारम्भ में लिखना कहां से शुरू हुआ इस बात पर विचार करते हैं। विभिन्न सबदवाणियों को देखने एवं पढ़ने से इस बात का पता चलता है कि जाम्भोजी ने अपना प्रथम शब्द किसी पुरोहित के संदर्भ में कहा था। उनका प्रथम शब्द देखें- 'गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पिरोहित, गुरु मुख धर्म बखाणी।' यही बात जो प्रसंग सहित सबदवाणी है, उसमें प्रथमतः प्रसंग में यह बात बताई गई है कि उन्होंने अपना अमुक प्रथम शब्द किसी पुरोहित को कहा था। उनके शब्दों के अध्ययन से भी इस बात का पता चलता है कि वे स्वयं 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) तथा 'सोहमस्मि' (मैं वही हूँ) वे स्वयं ब्रह्म थे। जब वे स्वयं ब्रह्म थे तो उन्हें अपने शब्दों के आगे 'ओ३म्' लिखने की जरूरत नहीं थी। उन्होंने जितने भी शब्द कहे हैं वे अपने मुखारबिन्द से प्रसंगानुसार उस व्यक्ति विशेष के संदर्भ में कहे हैं।

हमें सबसे प्राचीन सबदवाणी की प्रतियां वि.सं. 1796, 1810-19, 1833-38 परमानन्द बणियाल की लिपिकृत मिलती है। इनमें प्रथमतः सबदवाणी का प्रसंग है, फिर प्रथम शब्द गुरु चीन्हों है। इसके पश्चात् वि.सं. 1878, 1879, 1886, 1889, 1892 आदि की सबदवाणियां आती हैं, इनमें भी कहीं प्रथमतः ओम शब्द नहीं आया है। वि.सं. 1907 की जो हस्तलिखित प्रतिलिपि सबदवाणी की है, जो साधु गोविन्दराम द्वारा लिपिकृत है, उसके प्रथम एवं दूसरे शब्द में ओम शब्द जरूर आया है। इसके पश्चात् वि.सं.

1949 एवं 1955 में ईश्वरानन्द गिरि की सबदवाणी जम्भसागर प्रकाशित हुई है, लेकिन इनमें 'ओ३म्' शब्द प्रथमतः नहीं आया है। संवत् 1985 में जम्भगीता प्रकाशित हुई है, उसमें भी ओ३म् नहीं आया है।

मेरे विचार से 'ओ३म्' प्रथमतः आर्य समाज के प्रभाव से ही आया है। स्वामी दयानन्दजी ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी। वे इसके पश्चात् प्रथमतः मुरादाबाद सन् 1876 में आये थे। उस समय वे कांठ (मुरादाबाद) भी आये, जो बिश्नोइयों के निवास का क्षेत्र है। उन्होंने बिश्नोइयों के क्षेत्र में 'यज्ञ' होते हुए देखा था ओर यह भी कहा था कि यहाँ तो पहले से ही वेद संस्कृति व्याप्त है। यहाँ मुझे कुछ अधिक करने की जरूरत नहीं है। उस समय बहुत संख्या में बिश्नोई आर्य समाज में भी शामिल हो गये थे। वि.सं. 1978 में साहबरामजी राहड़ का ग्रंथ जम्भसार प्रकाशित हुआ। इसमें सबदवाणी भी है। उसमें शब्दों के प्रथम में ओ३म् लगा है। यह ग्रंथ प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात् ही कुछ प्रकाशित सबदवाणियों में 'ओ३म्' शब्द के पहले लगा हुआ है। इसका उदाहरण हमें लाहौर से प्रकाशित सबदवाणी (गुटका) में देखने को मिलता है। यह सबदवाणी वि.सं. 1993 में प्रकाशित हुई थी। आजकल हवन में जिस गुटके का वाचन किया जाता है, वह इसका ही प्रतिरूप है। उसमें ओ३म् प्रथमतः लिखा हुआ है, लेकिन है। शब्द का प्रारम्भ 'गुरु चिन्हो' से ही करते हैं।

हम यह पहले ही अध्ययन कर चुके हैं कि 'ओ३म् अग्निमीळे पुरोहित' ऋग्वेद का प्रथम मंत्र है। यह मंत्र अग्नि देवता की स्तुति में कहा गया है। यह मंत्र जप्प को प्रभावशाली ओर शुद्ध बनाता है। ओ३म् ब्रह्माण्ड का नाम है और मनुष्य के अंतर में ईश्वर का प्रतीक है। जब यज्ञ प्रारम्भ होता है, सर्वप्रथम ओ३म् का उच्चारण करके मंत्र पढ़ा जाता है। ओ३म् कहकर ब्रह्मा अनुज्ञा देता है कि अग्निहोत्र शुरू किया जाये। शायद इसीलिए ही बिश्नोइयों ने भी (जो शुरू में आर्य समाज से प्रभावित हुए और आर्य समाज अपनाया) सबदवाणी का पाठ प्रारम्भ करने से पहले ओ३म् बोलना शुरू किया है। क्योंकि बिश्नोइयों में जब यज्ञ करते है, तब सबदवाणी का वाचन करते हैं। इसमें प्रथम शब्द से अंतिम शब्द तक इसका वाचन होता है और अंत में ओ३म् स्वाहा बोलते हैं। अब सम्भवतः यह परम्परा में है कि ओ३म् सबदवाणी में लिखने में रह गया है, बोलने में यह लोप हो गया है। इसी तरह 'ओ३म् स्वाहा' अब सबदवाणी में लिखने में लोप हो गया है और यज्ञ करते समय बोलने में रह गया है। क्योंकि हमें आधुनिक सबदवाणी में यही देखने को मिलता है।

जैसे उपरोक्त बताया गया है कि 'ओ३म् अग्निमीळे पुरोहित' ऋग्वेद का प्रथम मंत्र है। वेदों के सभी मंत्रों में सर्वप्रथम 'ओ३म्' लिखा हुआ है, अथवा यह बाद में आर्य समाज के प्रभाव से लिखा गया है। यदि ऐसा है तो आर्य समाज में प्रभावित बिश्नोइयों ने जाम्भोजी के शब्दों के प्रथमतः 'ओ३म्' लिख डाला और बोलना भी प्रारम्भ कर दिया। जैसे ऋग्वेद का प्रथम मंत्र 'ओ३म् अग्नि मीळे पुरोहित' है, उसी प्रकार ही सबदवाणी का प्रथम सबद हुआ 'ओ३म् गुरु चिन्हों गुरु चिन्ह पुरोहित।' मुहम्मदपुर (बिजनौर) के मुंशी रामलाल ने वि.सं. 1996 में 'बिश्नोई धर्म वेदोक्त' नामक पुस्तक प्रकाशित की। इसमें जाम्भोजी के शब्द भी हैं, साथ ही उनकी टीका है। इसमें सबदों से पहले 'ओ३म्' लिखा है। जाम्भोजी के मुसलमानों के संदर्भ में कहे गये शब्दों में उन्होंने मुसलमानों की घोर निन्दा की है।

वि.सं. 2030 में यज्ञदत्त बिश्नोई ने 'सबदवाणी सरल हिन्दी अनुवाद' प्रकाशित की। इनकी सबदवाणी में शब्दों से पहले 'ओ३म्' लगा है। ये भी आर्य समाजी थे और मुंशी रामलाल इनके ताऊजी थे। इन्होंने तो यहां तक कहा कि सबदवाणी में मुसलमानों से संदर्भित आये हुए शब्दों को हमें निकाल देना चाहिए। शब्दों का पाठ करते समय तो इनका उच्चारण भी नहीं करना चाहिए। उनकी इस बात को तो बिश्नोइयों ने नहीं माना। आज भी बिश्नोई उन्हीं परम्परागत 120 शब्दों का ही पाठ करते हैं। लेकिन शब्द के प्रथम 'ओ३म्' लगाने की परम्परा तो अभी चालू ही है। बिश्नोई सबदवाणी में आज भी शब्द से पहले ओ३म् लगाकर प्रकाशित करवाते हैं। सन् 1976 में जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल एवं टीका) डॉ. महेसरी की प्रकाशित हुई। उन्होंने इसे 1970 में सम्पादित भी किया था, लेकिन ओ३म् और ओ३म् स्वाहा पर उन्होंने भी कुछ नहीं लिखा है और न ही सबद से पूर्व ओ३म् दिया है।

ओ३म् सबद के विषय में गुरु जाम्भोजी का यही कहना है–

ओ३म् सबद देव निरंजण, ता इछ्या ते भये अंजण।
पांच तत मा जोत प्रसनु, हरि दिल मिल्या हुकम विष्णु॥

–डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी–111, बिश्नोई भवन, समतानगर,
कृषि उपज मंडी के सामने, बीकानेर (राज.)
मो.: 9460002309

वील्होजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विक्रम सम्वत् 1585 के लगभग गुरु जम्भेश्वर जी भ्रमण हेतु वर्तमान हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि स्थानों में गये थे। हरियाण प्रवेश द्वार झूंपा गांव से उत्तर की तरफ दृष्टि डाली थी और बिश्नोइयों के बसने की उपयुक्त भूमि होने का निर्देश दिया था। आगे दिल्ली, खरड़, सोजणी, फलावदा, नगीना, शिवहारा, लोदीपुर तथा लखनऊ जाने का प्रमाण मिलता है।

लखनऊ में स्वातिशाह बादशाह ने जाम्भोजी को देखकर आंखें बंद करली थी। जाम्भोजी ने कहा राजन् तुम्हारा दुर्भाग्य ही है जो दर्शन से वंचित हो रहे हो। बादशाह की आंखें बंद हो गयी। दुःखी होकर गिड़गिड़ाया, तब जाम्भोजी ने कहा अभी नहीं खुलेगी, दूसरे जन्म में खुलेगी।

विक्रम संवत् 1593 में गुरुदेव अन्तर्ध्यान होने लगे। सब शिष्यों ने पूछा था कि हे गुरुदेव! आप तो अपनी ज्योति समेट रहे हो। पीछे इस पंथ का धणी कौन होगा? बिन मालिक के तो पशु भी ठीक से नहीं रह पाते हैं। जाम्भोजी ने कहा था कि आप लोग चिंता न करें। इस पंथ का स्वामी रेवाड़ी में परसाराम सुथार के घर जन्म ले चुका है। इस समय चार वर्ष की आयु हो चुकी है। आठ वर्ष बाद यहां आ जायेगा। मैं अपना उत्तराधिकारी घोषित करता हूँ। उनके लिए सफेद चादर, चोला, टोपी और माला देता हूँ। इसे सन्दूक में सुरक्षित रखें। जब वह आएगा तब उसे यह धरोहर सौंप देना।

उपस्थित नाथोजी आदि संतों ने पूछा कि हे गुरुदेव! उनकी पहचान कैसे होगी? जाम्भोजी ने बतलाया कि एक बार में ही हे नाथा। तुम्हारे कण्ठस्थ सबद सुनकर याद हो जाएगा और पूर्व जन्म की स्मृति होते ही चर्मचक्षु और हृदय के चक्षु भी खुल जाएंगे, यही पहचान होगी।

विक्रम संवत् 1601 में संभवतः फाल्गुन की अमावस्या को मेला लगा था। बिश्नोई भाई-बन्धु एकत्रित थे, हवन हो रहा था। सबदों की ध्वनि स्वर लहरी से आकाश गुंजायमान हो रहा है।

जिहि का दूरा हूतै दूर सणिजै सो सबद गुणा
कारूं, गुणा सारूं, बले अपारूं॥21॥

हिमटसर में संतों की जमात के साथ आये हुए वील्होजी ने श्रवण किया और पूछा कि इधर क्या है? किसी ने बतलाया कि गुरुद्वारा है। वील्होजी ने कहा कि मुझे भी वहां ले चलो। मेरा मन सबद श्रवण करने के लिए आतुर है। अपने साथी के साथ वील्होजी ने मुकाम मन्दिर में प्रथम बार 12 वर्ष की आयु में प्रवेश किया था और अपने साथी से कहा कि अब आप जा सकते हैं, मैं तो अब यहीं रहूंगा। जाम्भोजी की वाणी का अनुसरण करते हुए नाथोजी ने सफेद पोशाक वील्होजी को प्रदान करके बिश्नोई पंथ का स्वामी बना दिया। दस वर्षों तक वील्होजी अपने गुरु नाथोजी से शिक्षा ग्रहण करते रहे। ब्रह्मचारी रूप में रहकर विद्या अध्ययन किया। संवत् 1611 में चैत्र मास में दीक्षा भगवा वस्त्र धारण किया और उपलब्ध की हुई विद्या का प्रचार-प्रसार करने के लिए भ्रमण हेतु प्रस्थान किया।

उस समय लोगों की दिशा और दशा देखी तथा सुधार हेतु संलग्न हुए। प्रथम तो धर्माचरण करने की स्वतंत्रता का हनन होते हुए देखा। लोग बेवजह ही नये-नये बिश्नोई पंथ पर चलने वालों के लिए अड़चनें पैदा कर रहे थे। क्योंकि कोई एक भाई बिश्नोई बन गया था, किन्तु दूसरा भाई नहीं बना था। वह अपनी स्थिति सुधारने के लिए तो कुछ नहीं कर रहा थो जो धर्म कर्म में दृढ़ होने के लिए अग्रसर थे, उनको ईर्ष्यावश पीछे धकेलने के लिए अपनी ताकत लगा रहा था। अपने को तो कुछ नहीं करना, उन्नति के मार्ग से दूर रहना किन्तु दूसरे की टांग खिंचाई करना, यही धर्म अपना रखा था।

पूर्व जन्म में वील्होजी एक राजा थे। इस जन्म में भी उनमें सभी राजकीय गुण विद्यमान थे। इसलिए

जोधपुर राजा शूरसेन से मिलने जोधपुर राजदरबार में पहुंचे थे। राजा को अपनी न्याययुक्त वाणी, शक्ति और सिद्धि से प्रभावित करके जनता में उपस्थित अन्याय असहजता को दूर करने के लिए राज अधिकार प्राप्त किया। एक साधु वेश में होने के कारण वील्होजी ने वही नीति अपनायी कि सांप भी मर जाए लाठी भी नहीं टूटे। कुछ सिपाही तंबू, खूंटा, कोरड़ा, यही राजा से प्राप्त किया। किसी को जान से नहीं मारना था, केवल डर, भय दिखाकर मार्ग पर लाना, उन्हें इष्ट था। यही किया वील्होजी ने गांव-गांव, नगर-नगर भ्रमण करते हुए आम जनता में धर्म की स्थिति कायम की थी।

वे लोग जो बेवजह नवीन पंथ अनुयायी बिश्नोइयों को तंग करते थे, उन्हें दण्डित किया तथा जो बिश्नोई अभी नये ही बने थे, उन्हें सुरक्षित किया। जाम्भोजी द्वारा बताये गये नियमों पर अडिग रहने का संदेश दिया। उन्हें बताया कि यह बिश्नोई पंथ अनादि काल से चला आ रहा है। सतयुग में प्रह्लाद ने होली के दिन इस पंथ की स्थापना की थी। त्रेतायुग में हरिश्चन्द्र ने इस पंथ को आगे बढ़ाया था। द्वापर युग में धर्मराज युधिष्ठिर ने इसी पंथ का अनुमगन किया था और कलयुग में वि.सं. 1542 में सम्भराथल पर बैठ कर गुरु रूप में जाम्भोजी विष्णु ने इस पंथ से जोड़ा है। आप लोग बड़े भाग्यशाली हैं जो इस पंथ पर चल रहे हैं। 'युक्ति-मुक्ति' का यह मार्ग है, चलते रहो अवश्य ही जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करोगे और मुक्त होकर ज्योति में ज्योति का मिलन कर सकोगे।

साहित्य ही समाज का दर्पण है जिस समाज या पंथ के पास साहित्य लिखित इतिहास नहीं है, वह अधिक दिन नहीं चल पाता है। वील्होजी ने अपने गुरु नाथोजी से जो कुछ भी सुना था, वह लिखित नहीं था। केवल क्षेत्रीय ही था। गुरु शिष्य परंपरा से सुनते-सुनाते आये हैं, किन्तु विलुप्त होने का खतरा हमेशा ही बना रहता है। इसी बात को ध्यान में रखकर वील्होजी ने लिखना एवं लिखवाना प्रारम्भ किया। वि.सं. 1797 में परमानन्द जी ने पोथा लिखा था, उसमें उन्होंने प्रमाण दिया है कि 'बड़ पोथी गिन वील्ह की' सबसे बड़ी पोथी वील्होजी द्वारा लिखित थी तथा 'अनंत सबद सतगुरु कह्या, वर्ष पच्चासी प्रमाण। नाथोजी के कंठ एता रह्या, लिख्या वील्ह सुजाण।'

अपने से पूर्व प्राप्त साहित्य का संकलन किया और स्वयं भी वील्होजी बहुत बड़े कवि थे, उन्होंने भी अनेकों साखियां, हरजस, दोहा, कथाएं लिखी हैं और संग्रह की हैं। वील्होजी ने अपने शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाया और केशोजी गोदारा, सुरजनदास जी पूनिया को भी अपने ही सदृश कवि, धर्म प्रचारक तैयार किये। इस समय इन तीनों की त्रिवेणी द्वारा लिखित रचित साहित्य हमारे पास विद्यमान हैं। वील्होजी की सद्प्रेरणा से अनेकों कवि साहित्यकार इस समाज में हुए हैं जिन्होंने जाम्भाणी साहित्य को भरपूर कर दिया। इस समय हमारे पास बारह हजार से भी अधिक पृष्ठ हस्तलिखित उपलब्ध हैं जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

वील्होजी ने सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए जगह-जगह पर साथरियों की स्थापना की थी जो आज भी विद्यमान है। समाज में पंचायतें कायम की जिससे यदि कोई धर्म, कर्म, नियम छोड़ता है तो उसे साम, दाम, दण्ड, भेद से वापिस लाने की व्यवस्था की थी। बिश्नोइयों को एक सामाजिक व्यवस्था में लाने का कार्य वील्होजी ने ही किया था। गुरु जाम्भोजी ने कहां-कहां शिष्य बनाये थे उनको एकत्रित किया और एक साथ एक गांव में बसने की प्रेरणा दी जिससे धर्म-कर्म पालन करने की सुविधा हो सके। उनकी प्रेरणा से ही बीकानेर, जोधपुर, फलौदी, जैसलमेर, मेड़ता, नागौर, उत्तर प्रदेश तथा भीलवाड़ा आदि स्थानों में बिश्नोइयों के एक साथ बसने का अवसर प्रदान किया जो इस समय भी दर्शनीय तथा मौजूद है।

वि.सं. 1673 चैत्र सुदी एकादशी के दिन जोधपुर, रामड़ावास गांव में अपनी अन्तिम प्रसिद्ध रचना 'उमाहड़ो' बोलकर अन्तिम श्वांस ली थी। जीवन प्रारम्भ 'गुरु

तार बाबा' साखी से किया था और अन्तिम बिश्नोइयों को संदेश देते हुए 'वील्ह भणै बिश्नोइयों आपा नाम विष्णु के सीर' कहते हुए समाधिस्थ हुए थे।

वीलहोजी की भव्य कृतित्व और व्यक्तित्व को समझते हुए उनकी पुण्य स्मृति में रामड़ावास में समाधि मन्दिर बनाया गया था, जो आप दिव्य स्वरूप को धारण कर चुका है। वह कला युक्त वील्होजी का दिव्य जीवन था, वही कलाकृति उनकी यादगार में मन्दिर में पत्थर पर उकेरी गयी है।

इस समय वि.सं. 2073 चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी तदनुसार 15-16 अप्रैल, 2017 को वील्होजी को समाधिस्थ हुए 400 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इस उपलक्ष्य में जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा तीन दिवसीय संगोष्ठी जोधपुर एवं रामड़ावास में आयोजित की गयी। उसमें सम्पूर्ण भारत के चुनिंदा विद्वानों द्वारा जाम्भोजी एवं उनके परम शिष्य वील्होजी पर विचार-विमर्श हुआ। बिश्नोई समाज के गुरुदेव जाम्भोजी एवं उनके शिष्य कवि एवं संत सिद्ध पुरुष जाम्भोजी के कृपा पात्र वील्होजी के संबंध में यथार्थ वचन सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

यह लेख वील्होजी की नगरी रासीसर में जहां वील्हेश्वर स्कूल अन्तिम खूंटा वील्होजी ने रोपा था, जो एक खेजड़ी के रूप में हरा-भरा हो गया था, इस समय भी दर्शनीय है। यहीं पर परमानन्द जी अपना प्रसिद्ध पोथा ग्रंथ ज्ञान लिखा था और सम्पूर्ण किया था। परमानन्द जी ने अन्तिम में लिखा है 'पोथो ग्रंथ ज्ञान संपूर्णम्' गांव रासीसर मध्ये कान्हा के घरै, संवत् 1810'।

यहां पर दिव्य गौशाला में सप्तदिवसीय महायज्ञ का आयोजन किया गया और मुझे लिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

-आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश
मो.: 9897390866

लघु कथा

असली सुख

कुरु प्रदेश का राजकुमार भगवान् श्रीकृष्ण का भक्त था। उसने संकल्प लिया कि अपना समस्त जीवन वह वृंदावन में बिताएगा। वृंदावन पहुंचकर यमुना तट पर उसने कुटिया बनाई और पूजा-उपासना करने लगा। एक बार मगध देश के राजा सपरिवार वृंदावन पहुंचे। जब राजा-रानी यमुना स्नान करने जा रह थे, तब वृक्ष के नीचे उपासना में लीन तेजस्वी साधु को देखकर वे रुक गए। साधु की समाधि पूरी होने के बाद मगधराज ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'तपस्वी, मुझे आपके चेहरे के तेज से आभास होता है कि कहीं आप राजकुमार तो नहीं।'

साधु ने कहा, 'राज, भगवान् श्रीकृष्ण की पावन लीला-भूमि में न कोई राजकुमार होता है और न राजा। श्रीकृष्ण तो अपने सखा ग्वालों को भी गले लगाते थे, इसलिए यहाँ कुल और जाति का विचार करना भी अधर्म है।'

राजा युवा तपस्वी के वचनों से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने अनुरोध किया, 'आप हमारे साथ चलें। अभी आप युवक हैं। हम आपका विवाह अपने कुल की कन्या से करा देंगे। गृहस्थ आश्रम के सभी सुख आप भोगेंगे। कभी दु:खी नहीं रहेंगे।'

साधु ने पूछा, 'क्या राजा व धनवान को कभी दु:ख नहीं सताता? क्या राजा व गृहस्थ के परिवार में किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती? फिर सुख से रहने की बात कहकर आप मुझे साधना से विरक्त क्यों करना चाहते हैं?

श्रीकृष्ण की भक्ति में मुझे अनूठा सुख मिलता है।'

राजा ने युवा साधु को गुरु मान लिया और स्वयं भी राजपाट त्यागकर वृंदावन में रहने लगे।

साभार -201 प्रेरणास्पद कहानियां

श्री जाम्भेश्वर महादेव मंदिर ग्राम–जाम, तहसील कटंगी, जिला– बालाघाट, मध्य प्रदेश। वैज्ञानिकों को चुनौती दे रहा बाला घाट का चमत्कारी जाम्भेश्वर महादेव का मंदिर, सदियों से अनसुलझा है जड़ों का रहस्य–

बालाघाट में एक चमत्कारिक जाम्भेश्वर महादेव का मंदिर है जिसे स्थानीय लोग जाम्भेश्वर महादेव या जाम्भेश्वर शिव भी कहते हैं। मंदिर की छत पर एक विशाल पेड़ है, लेकिन उस पेड़ की जड़ों का कोई पता नहीं है।

मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले की कटंगी तहसील के अंतर्गत जाम गांव में दसवीं–पंद्रहवीं शताब्दी का बना एक रहस्यमयी मंदिर है, जिसका नाम जाम्भेश्वर महादेव मंदिर है। यह मंदिर अपने आप में कई रहस्यों को समेटे हुए है। जिसकी अनेकों मान्यताएं भी है, लेकिन इस रहस्यमयी मंदिर के चमत्कारों से विज्ञान आज भी अंजान नजर आ रहा है। दरअसल, इस मंदिर के पत्थर की छत पर एक शमी (खेजड़ी) का हरा भरा विशाल पेड़ खड़ा है। बताया जाता है कि यह पेड़ मंदिर निर्माण के समय का ही है। परन्तु स्थानीय लोग तथा वनस्पति वैज्ञानिक भी इस पेड़ को पहचान नहीं पा रहे हैं।

फल से निकलती है शिवलिंग जैसी आकृति

चौकाने वाली बात ये है कि इस पेड़ की जड़ों का किसी को पता नहीं। इसकी जड़ें दिखाई नहीं देती फिर भी बीते कई सालों से ये अडिग खड़ा है। जिस पर आंधी–तूफान का कोई असर नहीं होता। इस पेड़ को देख लोग हैरान हो जाते हैं कि पत्थर की छत पर इतना बड़ा पेड़ कैसे खड़ा है, जबकि इसकी जड़ें भी नहीं दिखाई दे रही है। पुरातत्व शोध संस्थान की टीम भी इस रहस्य को सुलझाने की कोशिश कर चुकी है, लेकिन इसकी जड़ों के बारे में कोई सही जानकारी नहीं पता चल सकी।

इस मन्दिर के रहस्य और विशेषताओं को लेकर गांव के गौरीशंकर राहंगडाले बताते हैं कि 95 सालों से मेरे पिता इस जाम्भेश्वर शिव मंदिर की सेवा करते आ रहे हैं। उनसे पहले उनके दादा और पुरखे सेवा किया करते थे। मन्दिर का निर्माण कब और कैसे हुआ यह कोई नहीं जानता। अपने पूर्वजों से पता चला है कि जब से मंदिर है, तब से पेड़ भी मंदिर की छत पर ऐसे ही खड़ा है। चाहे कितनी ही आंधी या तूफान आए, इस पेड़ की एक भी डाल नहीं टूटती। इस पेड़ की जड़ों का किसी को पता नहीं।

पुरातत्व विभाग की टीम भी ने भी इस मन्दिर की ऐतिहासिकता का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन काफी प्रयासों के बाद भी टीम इस पेड़ का नाम, प्रजाति और जड़ों का पता नहीं लगा सकी। गौरीशंकर राहंगडाले बताते हैं कि इस पेड़ के फलों के पकने पर इसमें से शिवलिंग के समान आकृति निकलती है। इसका स्वाद कच्चे आम की तरह है। आसपास के क्षेत्रों में इस तरह का कोई वृक्ष नहीं है और कोई इस पेड़ की प्रजाति या नाम भी नहीं जानता। मान्यता है कि मन्दिर की छत पर लगे पेड़ के फल हर किसी के भाग्य में नहीं होते।

स्थानीय लोगों की मान्यता के अनुसार दसवीं से पंद्रहवीं शताब्दी के बीच हुआ था मंदिर का निर्माण।

मंदिर की बनावट दसवीं शताब्दी के समान है। मंदिर परिसर में पुरातात्विक गणेश, हनुमान जी के साथ कई मूर्तियां हैं। यहां महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ समेत मध्य प्रदेश के दूर–दराज से श्रद्धालु दर्शन–पूजन के लिए पहुंचते हैं। शिवरात्रि में यहां एक मेला लगता है और विभिन्न धार्मिक आयोजन किए जाते हैं। श्रावण मास में भी भक्तों की भीड़ इस जाम्भेश्वर महादेव मंदिर में उमड़ती है। पुरातत्व विभाग ने इस मंदिर को सौंपने का आग्रह ग्रामीणों से किया, लेकिन प्रमुख आस्था का केंद्र होने की वजह से गांव के लोगों ने इस मंदिर का स्वयं रख–रखाव का जिम्मा लेते हुए पुरातत्व विभाग को मना कर दिया।

गांव को आफतों से बचाते हैं जाम्भेश्वर महादेव

ग्राम जाम के रहने वाले टेकचंद मनघाटे बताते हैं कि जम्भेश्वर महादेव के चमत्कारों को उन्होंने प्रत्यक्ष महसूस किया है। कुछ वर्षों पहले जब जमुनिया बांध टूटा था, तब 8 से 10 फिट ऊंची लहरें आसपास के गांवों में त्रासदी मचा रही थी, तब भी ये लहरें उनके गांव से गुजरकर आगे बढ़ गयी, लेकिन जम्भेश्वर महादेव मंदिर की सीमा को छू भी नहीं सकी। कोरोना जैसी महामारी में भी जम्भेश्वर महादेव के आश्रय और कृपा से कोई भी जनहानि नहीं हुई।'

ग्रामीणों की मानें तो जम्भेश्वर महादेव स्वयं गांव की सुरक्षा करते हैं। क्या बोले विशेषज्ञ सागर यूनिवर्सिटी के वनस्पति विज्ञान विभाग के पूर्व प्रोफेसर अजय शंकर मिश्रा कहते हैं कि किसी भी पेड़, पौधे या वनस्पति की पहचान के लिए फलों, पत्तियों और छाल के और नजदीक से चित्र लेने की जरूरत है। शुरू में जड़ प्रणाली छत की दरारों में दब गई और छत और दीवारों के भीतर स्थापित हो गई और अंत में जमीन तक पहुंच गई। पेड़ शुष्क पर्णपाती होता है, जिसके पत्ते छोटे होते हैं, जो पर्यावरणीय चरम सीमाओं और यांत्रिक कंपनों का सामना कर सकते हैं- सागर के आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज के वनस्पति विज्ञान विभाग के डॉ. रविंद्र सिंह बताते हैं कि पौधे की पहचान पत्तियों के द्वारा होती है। इसकी पत्तियां काफी छोटी-छोटी हैं। इसलिए संभावना है कि ये सीरिस परिवार से हो सकता है, जिसका वानस्पतिक नाम अलविजिया है। अगर यह अलविजिया है, तो यह औषधीय महत्व का होता है। खासकर श्वसन तंत्र से जुड़ी बीमारियों के अलावा त्वचा रोग और पेट रोग में इसका उपयोग होता है।

अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए जरूरी है कि जब पेड़ हरा भरा रहेगा और इसकी पत्तियां हरी रहेगी। तब वनस्पति शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर इसका अध्ययन कर अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि यह किस कुल का पेड़ है और इसकी क्या विशेषताएं हैं।

-डॉ. उदयराज खिलेरी
गांव-मेघावा, तह.-चितलवाना,
जिला-जालौर (राजस्थान)
मो.: 8003238748

पढ़ ले गुण ले सबदवाणी

विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी, इस जीवन के हावे।
क्षण-क्षण आव घटंती जावै, मरण दिनों दिन आवै॥
विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी, बल बल बारंबारूं।
कसणी कसबा भूल न बहबा, भाग परापती सारूं॥
विष्णु जी का जाप करो, करके दृढ़ विचार।
कट जाएंगे पाप तेरे, जपना बारंबार॥
उपलब्धि गर चाहो तो, हो जाओ तैयार।
कमर कसो मेहनत करो, फल होगा कर्मानुसार॥
भूल और अज्ञान में, राह भटक मत जाना।
इस अनमोल जीवन को, व्यर्थ नहीं गवाना॥
जीवन में करना सदा, सुकृत की कमाई।
निष्काम कर्म की भावना, एक दिन हो फलदाई॥
विष्णु जपंता जीभ ज्यूं थाके, तो जीभड़ियां बिन सरियो।
हरि हरि करता हरकत आवै, तो ना पछतावो करियो॥
विष्णु भजन को आपकी, जीभ जो करे इनकार।
फिर तो ऐसी जीभ है, बिल्कुल ही बेकार॥
जिह्वा अगर थक जाती है, करते हरि का जाप।
कर लेना तू विष्णु का, अपने मन में जाप॥
विष्णु जप के कारण तू, झेले अगर संताप।
कितनी ही बाधा आए, मत करना पश्चाताप॥
कष्टों और बाधाओं से, प्राणी मत घबराना।
हरि विष्णु भगवान का, नाम जपते जाना॥
जिह्वा अगर थक जाती है, जब लेती हरि नाम।
हे प्राणी ऐसी जिह्वा, क्या आए तेरे काम॥

-एडवोकेट बनवारी लाल ईशरवाल
पूर्व निदेशक, अभियोजन विभाग, हरियाणा
मो.: 9467297883

भाग-18 वेद विषय में पूछने पर जांभोजी ने जाट को सुनाया 14वाँ सबद

इससे पहले का सबद श्रवण कर जाट,
बोला वेद महिमा विषय पर पूछै बात।
हे गुरुदेव, वेद महिमा घणी सुणी नित,
वेद का भेद बताये संशय मिटेंगे तात॥

तभी सद्गुरु श्री ने समझाया जाट को,
सबद संख्या 14 में सही कहे बात को।
कई कई उदाहरण दे समझाते गुरु जी,
गुरु मुख के सबद ही बखाणै वेद को॥

मेरा हर कथन वेद का कथन है,
जो जानने का सब करै यत्न है।
करता वास्तविक ज्ञान कथन हूँ,
वो मेरा शुद्ध ज्ञान का कथन है॥

वो आत्म-तत्व का ज्ञान निराला,
कण तत्व का भेद बताने वाला।
तत्वज्ञान अनुभव का विषय है,
जो शास्त्रों और पुस्तकों में नहीं,
होय वो लिखा जा सकने वाला॥

शब्द ज्यूँ शब्द ब्रह्म में समाया है,
मेरी वाणी में घणा रहस्य आया है।
इसमें परम तत्व रहस्य वर्णित है,
उसे खोजों, रहस्य ये गहराया है।॥

परमेश्वर महिमा घणी अपार है,
जिसकी करनी र कृपा सार है।
उससे असम्भव से सम्भव होय,
यह सब मेरी वाणी अपरंपार है॥

हिरणों का क्या दोष है जो हेड़ी,
(शिकारी) उन्हें मार डालता है।
गायों का दोष होता उनको भी,
जो बाघ उनको मार डालता है॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा हो तो,
तो किसी को नहीं मार सकता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा हो तो,
कुत्ती के पिल्ले बघेरा न होता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
बाज कभी सुजीव नहीं होता।
बाज पक्षी अन्य पक्षियों का,

कभी शिकार करना छोड़ता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
गधे की बोली मधुर नहीं होती।
गधे का रेंगना कदै मधुर वाणी,
में परिवर्तित नहीं हो सकती॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
कुत्ते भौंकना समुद्र गर्जन न होता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
बिन सिंगों वाली काली हिरणी,
के जन्मा शावक नहीं हो सकता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
रीछ कभी पावन नी हो सकता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
बिल्ली के कभी संतोष न होता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
दुष्ट लोग कदै भले नी हो सकते।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
मुर्गी चूजा मोर नहीं हो सकता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
ऊंट की जाट का बना भाखला,
कदै रेशमी वस्त्र नी हो सकता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
जन्मते बच्चे के दांत नहीं सकते॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
जन्मते बच्चे के दंतपंक्ति न हो।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
लोहे में काठ की कील लगती॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
नीम के नारियल नी लग सकते।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
छिछले जल में रत्न हो सकते॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
तूंबा बैल नागरबेल न हो सकती।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
बांवळी पे केळा कोंपल न होती॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
गऊ बछा, पक्षी न हो सकता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
भील दयालु कदै नी हो सकता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
सूरी शावक हाथी नी हो सकता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
ओछी वृति का व्यक्ति कभी भी,
कार्यवृति का पूर्ण नहीं हो सकता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
कोव्वी जन्मा कोयल नी हो सकता।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा बिना,
बगुली जन्मा हंस नी हो सकता॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा से ही,
भगवद् विषयक सुन पावै ज्ञान।
श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा से ही,
ज्ञानी का हृदय प्रमुदित होता है॥

श्रीविष्णु (भगवद्) कृपा से ही,
ज्ञानी हृदय को मिलता ज्ञान है।
अज्ञानी हृदय के जीवों में लगे,
दंश यानि डंकसम ही लगता है।
ज्ञानी बात लगती डंक समान है॥

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
राष्ट्रीय सचिव, जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर; राष्ट्रीय प्रैस प्रभारी, अ.भा. जीवरक्षा बिश्नोई सभा, अबोहर
313, सेक्टर 14, हिसार मो.: 9518139200

बधाई संदेश

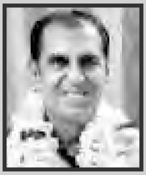

अशोक बिश्नोई सुपुत्र श्री तेजाराम पंवार निवासी गांव कोसाना, जिला जोधपुर को उपप्राचार्य, राजकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, जोधपुर के पद से राज्य सरकार द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया है।

श्री मनोज कुमार मांझू, अधीक्षण अभियंता (SE) IGNP/सिंचाई जल संसाधन विभाग, बीकानेर की अतिरिक्त मुख्य अभियंता (Addl. Chief Engineer) के पद पर पदोन्नति हुई है।

नरेन बिश्नोई सुपुत्र श्री नरपत कुमार बिश्नोई निवासी सिंगोली, जिला नीमच, म.प्र. का चयन केन्द्रीय गवर्नमेंट की परीक्षा में ऑल इंडिया रैंक 2068 प्राप्त कर सी.बी. आई में सब इंस्पेक्टर के पद पर हुआ है।

डॉ. राहुल सिहाग सुपुत्र श्री कुलदीप सिहाग निवासी गाँव भोडिया खेड़ा, जिला फतेहाबाद का चयन हरियाणा सरकार में मेडिकल ऑफिसर के पद पर हुआ है।

निखिल कुमार सुपुत्र श्री आलोक कुमार बागड़िया निवासी गांव दुतारांवाली, तह. अबोहर, जिला फाजिल्का का चयन पंजाब पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा उत्तीर्ण कर कृषि विकास अधिकारी (Agriculture Develop. Officer) के पद पर हुआ है।

दिव्या सिगड़ सुपुत्री श्री राजकुमार सिगड़ निवासी गांव चौधरीवास, जिला हिसार का चयन समस्त भारत में प्रथम रैंक प्राप्त कर भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के पद पर हुआ है।

श्री लादूराम पूनिया सुपुत्र श्री सदराम पूनिया गांव भूणिया, तह. धोरीमन्ना, जिला बाड़मेर की पुलिस विभाग में हेड कांस्टेबल के पद से पदोन्नति होकर सहायक उपनिरीक्षक पद पर पदोन्नति हुई है।

विष्णु बिश्नोई सुपुत्र श्री हरिशंकर बिश्नोई निवासी गांव नीमगांव, जिला हरदा, म.प्र. को पुणे में Northern Trust कंपनी के डेरिवेटिव्स डिपार्टमेंट में Analyst 1 के रूप में चयन हुआ है।

अनिल डेलू सुपुत्र श्री शिवकरण डेलू निवासी गांव काकड़ा, तह. नोखा, जिला बीकानेर ने अभियांत्रिकी स्नातक अभिक्षमता परीक्षा (GATE) 2025 इलेक्ट्रिक इंजिनियरिंग में पूरे भारतवर्ष में 31वीं रैंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

प्रीति सुपुत्री श्री रामकुमार डूडी ने चौ. चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार से विद्यावाचस्पति (Ph.D) में 8.8 का सर्वश्रेष्ठ GPA लेकर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जयप्रकाश सुपुत्र श्री प्रेम कुमार इशरवाल निवासी जलोडा, लोहावट, जोधपुर का AIIMS कल्याणी में Nursing Officer के पद पर चयन हुआ।

तनु बिश्नोई सुपुत्री श्री हंसराज पूनिया निवासी गांव खैरमपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग से M.Sc. स्वर्ण पदक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

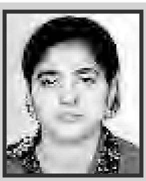

डॉ. श्वेता गोदारा सुपुत्री श्री कंवल किशोर गोदारा निवासी गांव बीघड़, तह. व जिला फतेहाबाद ने नीट पीजी 2024 की परीक्षा के माध्यम से PGIMS रोहतक में MS (Obgy) स्त्री रोग विशेषज्ञ में प्रवेश प्राप्त किया है।

केशव गीला सुपुत्र श्री रामसुख गीला निवासी गांव नीमगांव, जिला हरदा, म.प्र. ने नार्थन ईस्टर्न यूनिवर्सिटी टोरंटो, कनाडा से मास्टर आफ प्रोफेशनल ईस्टडीज एनालिटिक्स की डिग्री प्राप्त की।

बधाई संदेश

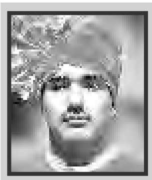

सुरेश कुमार सुपुत्र श्री हंसराज भादू, निवासी गांव रावतखेड़ा, तह. व जिला हिसार ने नेपाल में आयोजित Shooting Ball Asian Championship में पाकिस्तान को हराकर स्वर्ण पदक जीता है।

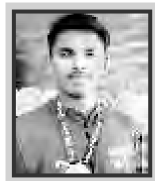

दिलबाग सुथार बिश्नोई सुपुत्र श्री लीलू राम निवासी गांव कालवास, जिला हिसार हरियाणा ने 1 से 7 दिसंबर 2024 को थाइलैंड में आयोजित वर्ल्ड एबिलिटी स्पोर्ट्स यूथ गेम्स में 100 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता है।

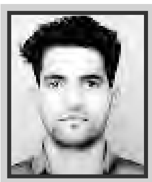

अश्वनी कुमार सुपुत्र श्री राजपाल साँवक निवासी गांव 11TK, श्रीगंगानगर, राजस्थान ने केरल में आयोजित 49वीं सीनियर नेशनल योगा चौंपियनशिप 2025 में सीनियर वर्ग डी में कांस्य पदक जीता है।

निकिता सुपुत्री श्री पुखराज बिश्नोई निवासी पनावली ग्राम पंचायत रामजी का गोल, तह. गुड़ामालानी, जिला बाड़मेर, राज. ने गायत्री शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-20 द्वारा आयोजित परीक्षा में तहसील स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आप सबकी इन उल्लेखनीय उपलब्धियों पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भूल सुधार मार्च अंक 2025

सूर्य प्रताप सिंह खिचड़ सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार खिचड़ निवासी गांव कालीरावण, हाल निवासी रोहतक का चयन The Indian Navy Officer Entry, Permanent Commission (10+2 बी.टेक.) में हुआ है।

'प्रह्लादा सूं वाचा कीवी आयो बारां काजे' लेख में राजा दुर्योधन के स्थान पर युधिष्ठिर पढ़ा जाए।

बाल काव्य

लाठी घोड़ा

एक समय गुरु गायां चारै।
और गुवाळै संग में सारे॥
गइया चारे खेले कूदे।
आ कल्पना करी है ऊदे॥
इतने में कुछ डाकू आये।
गैया ठोळ मारग ले धाये॥
दौड़ गुवाळ गुरु कनै आये।
डाकू ले गये सारी गाये॥
गुरु तरिका एक बताळावे।
लाठी का घोड़ा बनवावे॥
टाब्बर टोळी लाठी घोड़ा।
हल्ला सुण गैया को छोड़ा॥
गैया छोड़ चोर जब भागे।
नजर फाटी कारी न लागे।
गुरु परचो दीयो हद भारी।
अब तो मानै दुनियां सारी॥
ऊदो कहै गुरु आज्ञा मानो।
सबदवाणी में लिखी जानो॥

-**डॉ. उदयराज खिलेरी** अध्यापक
गांव- मेघावा, तह.- चितलवाना,
जिला-सांचोर (राजस्थान)
मो.: 8003238748

स्वामी विवेकानन्द एक उन्नयन प्रतिभा

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के शिमला मुहल्ले में प्रसिद्ध दत्त परिवार में 12 जनवरी, 1863 ईस्वी में हुआ। स्वामी विवेकानन्द के पिता विश्वनाथ दत्त भी हृदय और मस्तिष्क के कई गुणों से विभूषित थे। वे अंग्रेजी और फारसी भाषाओं में दक्ष थे। कानून को उन्होंने व्यवसाय के रूप में ग्रहण किया और कलकत्ता के हाइकोर्ट में वे सफल अटर्नी बन गये। विश्वनाथ संगीत के बड़े प्रेमी थे और उनका कण्ठ स्वर बहुत अच्छा था। उन्होंने नरेन्द्रनाथ को संगीत के अध्ययन के लिए प्रवृत किया, क्योंकि वे उसे निर्दोष आनन्द का साधन मानते थे।

स्वामी विवेकानन्द की माता एक अत्यन्त बुद्धिमती महिला थी और उनकी भव्य गरिमा और तेजस्विता को देखकर लगता था, मानो वो किसी राजवंश की हैं। इस हिन्दू सन्नारों की विशेषताएं समर्पण, सच्ची शक्ति और गाम्भीर्य थे। भाव यह है कि ये सभी गुणों से सम्पन्न नारी थी। उन्हें रामायण एव महाभारत महाकाव्यों के, जिनका कि वे नित्य पाठ करती थी, लंबे-लंबे उद्धरण कण्ठस्थ थे। शिशु के चरित्र गठन एवं मानसिक विकास में माता का प्रभाव सदैव सर्वाधिक रहता है। नरेन्द्रनाथ बाद में बताया करते थे कि कैसे उन्होंने कुछ अंग्रेजी शब्द सबसे पहले अपनी माता से सीखे और किस प्रकार उनके शिक्षकत्व में उन्होंने बंगला वर्णमाला पर अधिकार प्राप्त किया। मां की गोद में बैठकर सर्वप्रथम उन्होंने रामायण और महाभारत की कहानियाँ सुनीं।

श्रीराम के जीवन ने उनके शिशु मानस को मुग्ध कर दिया। रामायण का उन पर सर्वाधिक प्रभाव था और जब भी पड़ोस में रामायण का पाठ होता, वे अवश्य वहां उपस्थित रहते। नरेन्द्र को, जैसा कि अब उन्हें पुकारा जाता था, ध्यान का खेल बहुत पसन्द था। यद्यपि यह खेल ही था। ध्यान के प्रति बचपन से ही उनकी गहरी आस्था थी। एक दिन की घटना है कि वे ध्यान में इतने तन्मय हो गए कि स्वजनों को दरवाजा तोड़ कर कमरे में घुसना पड़ा और उन्हें प्रकृतिस्थ करने के लिए जोरों से हिलाना पड़ा।

परिव्राजक संन्यासियों के लिए नरेन्द्र के मन में बड़ा आकर्षण था। जब भी कोई साधु उनके दरवाजे आता, नरेन्द्र प्रसन्न हो जाते और घर में जो भी हाथ लगता, वह लाकर उसे दे देते। उन्हें आलौकिक शक्तियों का भी पूर्वाभास होने लगा। वास्तव में यह उनकी महती आध्यात्मिक सम्भावनाओं की सूचक थी। नरेन्द्रनाथ बचपन में बड़े नटखट थे और उन्हें सम्भालना बड़ा कठिन कार्य था। उनकी देखभाल के लिए दो धायों की आवश्यकता होती थी। नरेन्द्र अत्यन्त ही चंचल थे और बहुधा अनियंत्रित हो जाते थे।

छः वर्ष की आयु में नरेन्द्र को पाठशाला भेजा गया। पाठशाला में विचित्र संगी-साथियों से मिलन अनिवार्य सा हो जाता है, अतः कुछ दिनों में ही नरेन्द्र ने ऐसे शब्द सीख लिये जिससे परिवार की शालीनता विचलित हो उठी। परिणामस्वरूप नरेन्द्र को शाला जाने से रोक दिया। शीघ्र ही घर पर अपने अध्ययन में नरेन्द्र उल्लेखनीय बुद्धि का परिचय देने लगे। नरेन्द्र की स्मृति विलक्षण थी। उन्हें केवल शिक्षक को पाठ पढ़ाते हुए सुनना ही पर्याप्त था। सात वर्ष की आयु में उन्होंने 'मुक्तबोध' नामक संस्कृत व्याकरण को कण्ठस्थ कर लिया। साथ ही रामायण और महाभारत के लंबे-लंबे उद्धरणों को भी कण्ठस्थ कर लिया। सात वर्ष की आयु में नरेन्द्र ने पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा स्थापित मैट्रोपॉलिटन इंस्टीट्यूशन में प्रवेश लिया। उनके शिक्षक और सहपाठी तुरन्त उनकी अपूर्व बुद्धिमता के कायल हो गए। पर नरेन्द्र इतने चंचल थे कि उनके बारे में कहा जाता है कि वास्तव में वे कभी अपने डेस्क पर बैठ नहीं पाते थे। नरेन्द्र अपने साथियों में बड़े प्रिय थे। उनका प्रिय खेल 'राजा और दरबार' था। वे समय लगते स्कूल में ही खेलने लग जाते थे।

नये खेल उन्हें सदैव मुग्ध कर लेते ओर अपना एवं मित्रों का मनोरंजन करने के लिए वे स्वयं ही नए-नए खेलों का आविष्कार करते।

एक बार कक्षा में नरेन्द्र अपने मित्रों से बात कर रहे थे कि शिक्षक ने अचानक उन लोगों से उस पाठ को दोहराने के लिए कहा, जिसे वे पढ़ा रहे थे। अन्य सब लड़के तो चुप हो गए किन्तु नरेन्द्र के मन को दोहरा कार्य करने की सामर्थ्य थी, इसलिए वे लड़कों का मनोरंजन करते हुए भी पाठ को सुनने में समर्थ थे। उन्होंने शिक्षक के द्वारा किये गये सभी प्रश्नों का सही उत्तर दे दिया। नरेन्द्र अति कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। नरेन्द्र बचपन से समाज की व्यथा को जानने लग गए थे। सबका नरेन के प्रति प्यार बढ़ गया।

प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद नरेन्द्रनाथ कॉलेज में प्रविष्ट हुए। पहले वे प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ते रहे और बाद में स्कॉटिश जनरल मिशनरी बोर्ड द्वारा स्थापित जनरल असेंबलीज इंस्टीट्यूशन में प्रवेश लिया। कॉलेज में उन्होंने भारतीय और अंग्रेज प्रोफेसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, वो इनकी विलक्षण बुद्धि को देख कर आश्चर्यचकित थे। प्रिंसीपल डब्ल्यू.डब्ल्यू. हेस्टी ने एक बार कहा, मैंने सुदूर देशों का भ्रमण किया है। पर अभी तक मुझे कहीं भी ऐसा लड़का नहीं मिला, जिसमें नरेन्द्र की प्रतिभा और सम्भावनाएं हों। वह जीवन में अवश्यमेव अपनी छाप छोड़ जाएगा।

उनके ऊपर से दिखने वाले मौजी जीवन के अंतराल में वैराग्य की प्रवृत्ति विद्यमान थी। जब उनके पिता उज्ज्वल भविष्य का प्रलोभन देते हुए उन पर विवाह करने के लिए जोर देने लगे, तो उन्होंने विद्रोह किया और यह भी विचित्र है कि जब भी उनके विवाह की बात ऊपर उठती, तब किसी न किसी प्रकार की अदृष्ट बाधा आ जाती और बात वहीं पर खत्म हो जाती। नरेन्द्रनाथ ने अपने कॉलेज के प्रिंसिपल विलियम हेस्टी से एक बार श्री रामकृष्ण का उल्लेख सुना था। एक दिन प्रिंसिपल हेस्टी जब कक्षा में वर्डस्वर्थ की एक कविता पढ़ा रहे थे तो उन्हें कवि की भावावस्था को समझाने में कठिनाई मालूम पड़ी। तब उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि यदि वे ऐसी अनुभूति का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते हैं, तो वे दक्षिणेश्वर जाकर रामकृष्ण को देख सकते हैं, जिन्हें उन्होंने स्वयं उस अनुपम भावावस्था का आनन्द लेते देखा था। नरेन्द्र नाथ श्री रामकृष्ण से एक बार कलकत्ते में एक भक्त के घर मिल चुके थे। जहां उन्हें गाने के लिए निर्यत्रित किया गया था। अब अपने मन के उस संकटकाल में नरेन्द्रनाथ को अचानक श्रीरामकृष्ण का स्मरण हुआ और उन्होंने दखिणेश्वर जाकर यह पता लगाने का निश्चय किया कि श्री रामकृष्ण को ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति हुई है या नहीं। नरेन्द्रनाथ कुछ मित्रों के साथ दक्षिणेश्वर गए। अपने ही विचारों में मग्न, अपने शरीर और वस्त्रों के प्रति लापरवाह तथा बाह्य संसार के प्रति अनमने नरेन्द्र श्री रामकृष्ण के कमरे में प्रविष्ट हुए। एकाएक नरेन्द्रनाथ को देखकर रामकृष्ण जी को बड़ा अचरज हुआ और कहने लगे कि कलकत्ते के मौलिक वातावरण से ऐसा आध्यात्मिक पुरुष कहां से निकल आया जैसा कि उन्होंने बाद में व्यक्त किया।

नरेन्द्रनाथ ने श्री रामकृष्ण के अनुरोध पर दो बंगला गीत गाये। इन गीतों में इतनी आन्तरिकता और भक्ति थी कि श्री रामकृष्ण समाधि मग्न हो गए। लगभग एक महीने बाद नरेन्द्रनाथ फिर से दक्षिणेश्वर आए और इस समय तो उन्हें और भी विचित्र अनुभव हुआ। श्री रामकृष्ण के प्रेम ने नरेन्द्रनाथ को जीत जो लिया था। वे अब बारम्बार दक्षिणेश्वर आया करते। श्री रामकृष्ण जी आकुलतापूर्वक उनकी बाट जोहते रहते। यदि नरेन्द्रनाथ से भेंट हुए अधिक समय बीत जाता तो श्री रामकृष्ण उनींदी रातें बिता देते। श्री रामकृष्ण और नरेन्द्रनाथ के बीच जो मधुर संबंध था, उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है। श्री रामकृष्ण नरेन्द्र पर भरोसा करके अपने हृदय के गूढ़तम रहस्यों को बताते। उनके विचार स्वातंत्र्य का विकास करने के लिए वे तरह-तरह से उनकी सहायता करते और इस प्रकार उन्होंने नरेन्द्र की आत्मनिर्भरता, सत्यनिष्ठा एवं जन्मजात

आध्यात्मिकता को सहस्त्र गुण बढ़ा दिया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, श्री रामकृष्ण के प्रति नरेन्द्र की श्रद्धा भी वैसे-वैसे सहस्त्रगुणी बढ़ती गई और अब वे श्री रामकृष्ण को आध्यात्मिकता के उच्चतम आदर्श के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हो चले।

अब नरेन्द्रनाथ अपनी आध्यात्मिक पिपासा की तृप्ति का समय समीप ही अनुभव कर रहे थे, तभी अचानक एक अप्रत्याशित विपत्ति आ खड़ी हुई, जिसने उन्हें एकदम विचलित कर दिया। सन् 1884 के प्रथम भाग में नरेन्द्रनाथ के पिता का एकाएक हृदयगति के रूकने से देहावसान हो गया। परिवार का सारा भार अकेले उन्हीं पर था। उन्होंने जो कुछ अर्जित किया था, उससे अधिक तो खर्च किया था अतएव उनकी मृत्यु से परिवार बेहद गरीबी का शिकार हो गया। साहूकार आकर दरवाजा खटखटाने लगे। नरेन्द्रनाथ के जिन संबंधियों के लिए उनके पिता ने बहुत कुछ किया, वे ही अब उनके शत्रु बन गए और वे उनके परिवार को घर से निकालने की भी धमकी देने लगे।

अतएव छः या सात लोगों के भरणपोषण का भार नरेन्द्रनाथ पर आ पड़ा। उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी तथा लॉ में प्रवेश लिया था। एक धनी बाप का बेटा आज कॉलेज में गरीब से गरीब हो गया। यहां तक कि जूते भी अब उनके लिए विलास की सामग्री हो गए। उनके वस्त्र मोटे-से-मोटे कपड़ों के होते और कई बार तो वे बिना कुछ खाए ही कॉलेज चले जाते।

नरेन्द्र की चारित्रिक दृढ़ता पर भी रामकृष्ण का जो अटूट विश्वास था तथा उनके प्रति जो निःस्वार्थ प्रेम था, उसने नरेन्द्र के कठोर हृदय को जीत लिया। जैसे-जैसे श्री रामकृष्ण से उनकी घनिष्ठता बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनकी प्रतिरोध करने की प्रवृत्ति भी कम होती गई और अन्ततोगत्वा उन्होंने श्री रामकृष्ण के प्रति अपने को पूरी तरह समर्पित कर दिया। बाद में नरेन्द्रनाथ बहुधा कहा करते थे, 'एकमात्र श्री रामकृष्ण ही ऐसे थे, जिन्होंने जब से मेरा उनसे परिचय हुआ, मुझ पर सदैव समान रूप से विश्वास किया, यहां तक कि मेरी माँ और मेरे भाई भी ऐसा न कर सके। वह उनका मेरे प्रति अडिग विश्वास और प्रेम ही था, जिसने मुझे उनसे सदा के लिए बांध लिया। एकमात्र वे ही जानते थे कि एक दूसरे से किस प्रकार प्यार करना चाहिए। नरेन्द्रनाथ जी का सम्पूर्ण प्राणी मात्र से प्रगाढ़ प्यार था। नरेन्द्रनाथ की सर्जनशील कल्पना अब तक श्री रामकृष्ण के आध्यात्मिक जीवन की लपट से प्रज्ज्वलित हो चुकी थी और अब वह सांसारिक महत्वकांक्षाओं से संतुष्ट होने वाली नहीं थी। उनकी आत्मा जीवन के सुदृढ़ बन्धनों से छुटकारा पाना चाहती थी। बहुधा अपने मानसिक तनाव की शान्ति के लिए वे घर के घुटनभरे वातावरण से भाग आते और दक्षिणेश्वर के पावन देवालय में श्री रामकृष्ण के चरणों में शरण लेते। श्री रामकृष्ण की आध्यात्मिक दृष्टि के समक्ष नरेन्द्र के भीतर की सारी आकांक्षाएं पूरी तरह प्रकट थी।

वे असीम स्नेह और धीरज के साथ नरेन्द्र को तैयार करने लगे और उनके ये प्रतिभाशाली शिष्य भी उनके उपदेशों को ग्रहण करने में समान रूप से तत्पर हुए। अपनी अपूर्व मेधा और अनुपम उत्साह के कारण नरेन्द्र अपने जीवन में वह सब उतारने में समर्थ होने लगे, जो व्यावहारिक सुझाव एवं उपदेशों के रूप में श्री रामकृष्ण के मुख से निकला। नरेन्द्रनाथ ने मानवता के समक्ष ज्ञान पर आधारित सेवा के उस महान आदर्श की घोषणा की, जिसे उन्होंने पवित्र विरासत के रूप में दक्षिणेश्वर की शान्तिमय तपोभूमि में अपने गुरुदेव से प्राप्त किया था। 1885 ईस्वी के मध्य में श्री रामकृष्ण के गले में एक उपसर्ग दिखाई देने लगा, जो अंततोगत्वा घातक कैंसर में परिणत हुआ। श्री रामकृष्ण जान गए थे कि उनके लीला संवरण का दिन समीप आता जा रहा है, इसलिए वे अपने प्रमुख शिष्यों में ईश्वर दर्शन की तीव्र इच्छा को जगा देने के लिए अधिक उत्सुक हो चले थे। उनका स्वयं का जीवन,

उनकी वाणी की अपूर्व शक्ति, उच्चतम समाधि में मग्न हो जाने की उनकी सहजता और ईश्वर के साथ उनका ऐक्य– ये सब बातें इन तरुण शिष्यों के लिए अजस्त्र प्रेरणा का उत्स थी। जिस समय नरेन्द्र सभी ओर से प्रतिकूल परिस्थितियों के धक्के खा रहे थे, श्री रामकृष्ण का सन्देश उनके हृदय की गहराइयों में उतर गया और सदा के लिए वहीं बस गया। जब थोड़ा अवकाश मिलता, वे इन लोगों को इकट्ठा करते और वह समय अध्ययन, संगीत वार्तालाप और श्री रामकृष्ण के चरित्र की दैवी विषमताओं पर विचार विनिमय में बिता दिया जाता। हर प्रकार से नरेन्द्र उनके नेता थे। ध्यान की गहराइयों में नरेन्द्र को कई दुर्लभ आध्यात्मिक अनुभूतियां हुई।

श्री रामकृष्ण ने उन्हें पहले से ही साधनाओं के विभिन्न मार्गों की दीक्षा दी थी और वे उन्हें उन युवा संन्यासियों के नेतृत्व के लिए तैयार कर रहे थे, जो निकट भविष्य में पृथ्वी में सर्वत्र उनके संदेश का प्रचार करने हेतु अपना जीवन समर्पित करने वाले थे। एक दिन श्री रामकृष्ण ने उन्हें स्पष्ट रूप से इन युवा भक्तों की देखरेख करने का निर्देश देते हुए कहा, 'मैं तेरे संरक्षण में इन लोगों को छोड़ता हूं। देखना मेरे चले जाने के बाद भी वे साधन भजन करते रहे और घर वापस न जाएं।'

16 अगस्त 1886 को श्री रामकृष्ण अपने शिष्यों को घोर शोक में डुबाकर महासमाधि में लीन हो गए। इसके पश्चात् नरेन्द्र इन युवा शिष्यों को एक संन्यासी संघ में संगठित करने लगे। जो लड़के फिर से अध्ययन करने के लिए घर लौट गये थे, नरेन्द्र उनके यहां गये और अत्यन्त उत्साह दिखाते हुए उन्हें वराहनगर आने की प्रेरणा देने लगे। जहां रामकृष्ण संघ का पहला मठ प्रारम्भ किया गया था। एक बार वे मठ में आये कि नरेन्द्र के भजनों और रोमांचक संलापों में निहित आध्यात्मिक प्रेरणा का प्रतिरोध न कर सके। एक के बाद एक युवा शिष्य इकट्ठे होते गए और अन्त में उन्होंने अपने को नरेन्द्रनाथ के प्रेरक नेतृत्व में एक पावन भ्रातृसूत्र में बांध दिया। इस समय इन बालकों को अत्यधिक अभावों का सामना करना पड़ता, पर अभाव की यह विकरालता उन्हें भयभीत न कर सकी। अपने गुरुदेव के निर्देशों के पालन में वे इतने मग्न थे कि वे निद्रा भूलकर रात प्रार्थना और साधना में बिता देते।

नरेन्द्र सदैव ही उन्हें प्रज्ज्वलित त्याग और तीव्र भक्ति के लिए प्रेरित करते रहते। उच्चतम सत्य की अनुभूति के संघर्ष को तीव्रतर बनाने के लिए प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों के अध्ययन में घंटों बिता दिए जाते। जो भी उनके प्रभाव की सीमा में आता, वह उनके ईश्वरोन्मत भाव से अभिभूत हो जाता। ये संन्यासी एक शहीद की तरह उल्लास के साथ कठोरतम आध्यात्मिक साधनाओं में रत हो गए। उस समय उनके समक्ष संसार का कोई अर्थ ही न रहा। इस अवधि में एक दिन उन्होंने पवित्र विरजा होम सम्पन्न किया और ईश्वर के साक्षात्कार हेतु अपने जीवन को समर्पित करते हुए औपचारिक रूप से आजन्म ब्रह्मचर्य और त्याग का व्रत ग्रहण किया।

पुराने संसार और उसके सम्पर्कों से अपना सम्बन्ध पूरी तरह विच्छिन्न करने के लिए उन्होंने पुराने नाम बदलकर नए ग्रहण कर लिये। यहां नरेन्द्रनाथ की अपने मुख श्री रामकृष्ण के प्रति गहरी आस्था और प्रगाढ़ता का भाव देखने को मिलता है। गुरु परम्परा को अपनी आखिरी सांस तक कायम रखा। देश व विदेशों के कोने–कोने घूमा और भारतीय संस्कृति का परचम लहराया। ऐसा प्रतिभावान व्यक्तित्व का धनी सदैव सम्पूर्ण मानवता के दिलों में वास करेगा। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिपल जागृत करता रहेगा। स्वामी विवेकानन्द के संदेश पूर्णतया मानवतावादी और सकारात्मक रहेंगे।

–**डॉ. सत्यपाल शर्मा** (एडवोकेट)
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, हिसार
मो.: 9991852540

श्रम परिहार के लोकगीत (भाग-3)

घ) चक्की से अनाज पीसते समय के गीत: एक समय था जब साधनों के अभाव में आटे का प्रबंध घर पर ही किया जाता था। उस समय सभी घरों में हाथ से चलाने वाली चक्की होती थी और उसी से अनाज पीसकर आटा तैयार किया जाता था। तब बिश्नोई समाज में भी चक्की का विशेष महत्व था। हाथ चक्की से अनाज पीसना बिश्नोई स्त्रियों का दैनिक कार्य रहा है। दिन के कार्यों का प्रारम्भ चक्की से ही होता रहा है। संयुक्त परिवार प्रथा के कारण बिश्नोई स्त्रियों द्वारा रोज काफी मात्रा में अनाज पीसा जाता था। चक्की चलाते समय गीत भी गाये जाते थे, जिससे चक्की चलाने से होने वाली थकान दूर हो जाती थी। इसी कारण चक्की चलाते समय गीत भी श्रम परिहार के अंतर्गत माने जाते हैं। चक्की चलाते समय गाये जाने वाले इन गीतों में जीवन से संबंधित विभिन्न विषय अभिव्यक्त होते रहे हैं, पर इनमें प्रमुखता आध्यात्मिकता की रही है। ये गीत गायक एवं श्रोता दोनों को ही आनंद विभोर करते रहे हैं। चक्की चलाते समय गाये जाने वाले गीत एकल गायक द्वारा ही गाये जाते हैं।

भगवान के भजन गाने का समय प्राय: प्रात:काल का ही होता है और स्त्रियां चक्की से अनाज भी प्रात:काल ही पीसती रही हैं। ऐसी स्थिति में कई बार स्त्रियां अनाज पीसते समय आनंदित होकर भगवान के भजन भी गाती रही हैं। ऐसे गीतों के गाने से स्त्रियों का मन तल्लीन हो जाता है और वे आनंदित होकर गीत गाती रहती हैं, जिसमें उन्हें चक्की चलाने के श्रम की अनुभूति नहीं होती और वे दुगने वेग से चक्की चलाकर अपने निर्धारित कार्य को पूरा कर लेती हैं।

बिश्नोई समाज में चक्की चलाते समय गाये जाने वाले गीतों में जब गायिका को विष्णु स्मरण में आनंद अनुभव होने लगता है, तब उसकी दृष्टि से भौतिक कार्यों का महत्व कम हो जाता है। यही कारण है कि एक गीत में बहू, सास द्वारा बताये गये भौतिक कार्य को छोड़कर पहले विष्णु स्मरण करना चाहती है। ऐसे गीतों को गाकर गायिका आनंदित होती रहती है, जिससे वह चक्की चलाने के कष्ट एवं श्रम की थकान को भूल जाती है।

मेरो नौ ताड़ी गो चिमटो, मेरै सतगुरु दियो घड़ाय।

छमाछम बाजै चिमटो रे।

मेरी सास कह्‌वै बहू पीस ले,

मेरी माळा गो होयग्यो टेम।

सासू ढाई घंटा माळा फेरस्यां, फेर पीसांगा थारो चूण।[1]

बुन्देली लोकगीतों में चक्की चलाने वाली कोई विरहिणी अपने विरह की समाप्ति पर होने वाले आनन्द को गीत के माध्यम से अभिव्यक्त करके आनंदित हो रही है और तीव्रता से चक्की चलाकर अपने कार्य को पूर्ण करने का प्रयास कर रही है।[2]

जब मोरे रसिया कुअला पे आये,

रीते कुंआ भर आये, गोरी रसिया।[3]

खाली कुंआ दुख का एवं भरा हुआ कुंआ आनंद का प्रतीक है। विरह के बाद प्रेमी के आगमन पर प्रेमिका के हृदय में आनंद के रस की वर्षा हो रही है और उसी से सूखे कुएं जल के भर गये हैं। ऐसे आनंदमय गीत ही चक्की चलाने वाली को आनंदित करते रहते हैं और उसके श्रम का परिहार होता रहता है।

बिश्नोई समाज के चक्की से अनाज पीसने के एक संवादात्मक गीत में सास-बहू का वार्तालाप है। गीत में सास की ओर से बहू पर राम भजन की अपेक्षा अनाज पीसने एवं घर के अन्य कार्य करने का दबाव बनाया जा रहा है। इसके बदले में बहू सास को समझा रही है कि घर के दैनिक कार्यों को हाथों से किया जा सकता है और हृदय में बसे भगवान को जीभ से स्मरण किया जा सकता है। इन दोनों कार्यों में कोई विरोध नहीं है। गुरु जाम्भोजी ने भी ईश्वर को सर्वव्यापी माना है। ईश्वर के सर्वव्यापी होने के साथ-साथ उन्होंने हृदय में विष्णु जप एवं हाथों से कार्य करने पर बल दिया है।

हिरदै नांव विसन का जंपौ, हाथे करो टबाई।[5]

गुरु जाम्भोजी की इसी शिक्षा का प्रभाव इस गीत में दिखाई देता है। प्रस्तुत गीत में भी बहू दोनों कामों को साथ -साथ करने पर जोर देती है।

चाकी कनै धरयो रे पीसणो, राम रटण नै जाय।

ए बहू तूं म्हानै बता दे, कठै बसै भगवान।

आटो तो हाथां सूं पीसो, मुख सूं रटल्यो राम।[6]

चक्की के इस गीत में बहू सास को यह समझाती है

कि सांसारिक कार्यों के साथ-साथ राम स्मरण भी किया जा सकता है। इस तरह मनुष्य निरन्तर अच्छे कर्म करके भौतिक जीवन को सुखी बनाकर और उसके साथ विष्णु स्मरण से मोक्ष प्राप्ति में सफल हो सकता है। बिश्नोई पंथ प्रवृत्ति मार्गी है[7], जिसमें मोक्ष प्राप्ति हेतु गृहस्थ जीवन को त्याग करने की आवश्यकता नहीं है। इसी कारण समाज के इस गीत में सांसारिक कार्यों के साथ-साथ ईश्वर स्मरण पर बल दिया गया है।

बाखळ में तो धरी रे बाल्टी, राम रटण नै जाय।
ए बहू तूं म्हानै बता दे, कठै बसै भगवान।
गायां तो हाथा सूं दुवो, मुख सूं रटल्यो राम।
ए मोरी भोळी सासू, हृदय बसै भगवान।[8]

ऐसे मधुर गीत, जो प्रात:काल के शांत वातावरण में चक्की की आवाज के साथ घर-घर से सुनायी पड़ते रहे हैं, जिससे चक्की चलाने वाली स्त्री की थकान भी दूर हो जाती थी और वह आनंद विभोर होकर अपने काम को समय से पूर्व ही पूरा कर लेती थी, पर आज स्थिति परिवर्तित हो गयी है। मशीनों के इस युग में हाथ चक्की का युग समाप्त हो गया है, जिसका प्रभाव लोकगीतों पर पड़ा है। जब से समाज में हाथ-चक्की से अनाज पीसने का काम बंद हुआ है तभी से चक्की से सम्बन्धित गीतों का गाया जाना भी बंद हो गया है। आज ऐसे गीत न केवल बिश्नोई समाज अपितु पूरे देश से ही लुप्त हो गये हैं। इस अमूल्य धरोहर के लुप्त होने से समाज को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ेगी।

(ङ) चरखा चलाते समय के गीत: बिश्नोई समाज के निवास प्रमुख क्षेत्र ग्रामीण रहा है। यहीं रहकर यह समाज कृषि एवं पशुपालन अपनी जीविका चलाता रहा है। इन दो ग्रामीण व्यवसायों से जुड़े रहने के कारण बिश्नोई समाज का जीवन बड़ा सादा एवं सरल रहा है। अपने खेतों में अपनी मेहनत से उत्पादित अनाज व अपनी गाय-भैंस से प्राप्त घी-दूध का सेवन करके यह समाज स्वस्थ एवं शक्तिशाली बना रहा है। सादे एवं पौष्टिक भोजन के साथ-साथ इस समाज का पहनावा भी मोटा एवं सादा रहा है। अपने हाथों से सूत कातकर दरी, खेसला, सोड़ आदि वस्त्रों को तैयार करके उन्हें काम में लेना बिश्नोई समाज की प्रमुख विशेषता रही है, जिसके मूल में गुरु जाम्भोजी की शिक्षा रही है। उन्होंने सबदवाणी में मोटा ओढ़ना, पहनना, सादा भोजन, गाय का दूध-दही, स्वच्छ जल एवं हक की कमाई खाने पर बल दिया है।

खरड़ ओढीजै तूंबा जीमीजै सुरह दुहीजै।
किरत खेत की सींव में लीजै पीजै ऊडा नीरूं।[9]

चरखे से काते हुए सूत से रंगीन चारपाइयां बुनने में बिश्नोई समाज की विशेष रूचि रही है। इस आधार पर चरखा बिश्नोई समाज के ओढ़ने-पहनने के कई कपड़ों की मांग पूरी करता रहा है और समाज को आर्थिक सहयोग देता रहा है। इसी आर्थिक सहयोग के कारण ही चरखा समाज विकास में भी सहायक रहा है। बिश्नोई समाज की स्त्रियां घर एवं खेती के कार्यों को पूर्ण करके चरखे से सूत भी कातती रही हैं। सूत कातने का कार्य अकेले या कभी-कभी सामूहिक रूप में भी किया जाता रहा है। समाज के एक गीत में सामूहिक रूप बारीक सूत कातकर वस्त्र बनाने का वर्णन किया गया है।

काकै जी रै आंगणीय बड़बोर, कातो सहेल्यो नानो रे सूत।
कात बणावो नी जुग बालै गी फामड़ी।[10]

सामूहिक रूप में सूत कातते समय कई बार अधिक एवं बारीक सूत कातने की होड़ भी लगती रही है। अधिक मात्रा में एवं बारीक सूत कातने वाली महिला को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। चरखे के अत्यधिक प्रयोग के कारण ही समाज में लोग दहेज में बेटियों को चरखा भी देते रहे हैं। चरखा चलाते समय नींद न आवे या चरखा चलाने से थकान न हो या विशुद्ध मनोरंजन के उद्देश्य से स्त्रियां चरखा चलाते समय गीत गाती रही हैं, जो 'चरखे के गीत' कहलाते हैं। चरखे की मधुर ध्वनि के साथ गीत की स्वर लहरियों के मिश्रण से मधुर संगीत की सृजना होती रही है। वैसे भारतीय जीवन में चक्की एवं चरखा श्रम एवं उत्पादन के प्रतीक रहे हैं। ये दोनों ही साधन घर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने में सहायक रहे हैं। हरियाणा के एक गीत के अनुसार एक स्त्री चरखे की कमाई से अपने देवर का विवाह एवं ननद का मुकलावा करती है।[11] स्त्री जाति के लिए तो चक्की व चरखा शक्ति के प्रबल साधन रहे हैं। 'ये दोनों ही हथियार उनके दो हाथ रहे हैं, जिनसे वे अपने परिवार को अन्न-वस्त्र देती आई है।' स्त्री जाति की चरखा चलाने की शमिका लोहा महात्मा गांधी ने भी स्वीकार कर लिया था। इसी आधार पर उन्होंने सत्य-अहिंसा के साथ-साथ चरखे को भी स्वतंत्रता संग्राम का अमोघ अस्त्र बनाया था। गांधी जी ने चरखे के माध्यम से श्रम का संदेश गांव-गांव तक पहुंचाया था, जिससे लोग घर-घर में चरखा चलाने लग गये थे। गांधी जी की प्रेरणा से श्रम करने की गति तीव्र हो गयी थी और लोगों के कंठों

से चरखे का यह गीत सुनाई देने लगा था।

चरखे का टूटे न तार, चरखा चालू रहे दिन-रात।[13]

चरखे के इसी महत्व के कारण इसका स्वतंत्रता प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बिश्नोई समाज में भी चरखा उत्पादन एवं श्रम का प्रतीक रहा है। समाज में चरखे के गीत श्रम परिहार के साथ-साथ स्त्री समाज के लिए मनोरंजन के भी साधन रहे हैं। बिश्नोई समाज में अधिकांश स्त्रियां रूचि के साथ सूत कातने का काम करती रही हैं, पर कुछ गृहणियां सूत कातने को बोझ मानकर इससे बचने का बहाना भी बनाती रही है।

एक्यूं गी मैं कातूं कोनी। एक्यूं एकलो बार है।
नमयूं गी मैं कातूं कोनी। नमयूं गो गोगो जी है।
दस्यूं गी मैं कातूं कोनी। दस्यूं गो दसहरो है।[14]

एक ओर गीत में प्रियसी द्वारा सूत न कातने के बहानों का वर्णन है तो दूसरी ओर बिश्नोई समाज में विभिन्न तिथियों के संबंध में जो मान्यताएं प्रचलित हैं, उनका भी चित्रण इस गीत में किया गया है। इनके साथ -साथ गीत में बिश्नोई समाज में बेटी के त्योहार पर अपने पीहर जाने की परम्परा का भी उल्लेख किया गया है।[15]

चरखे के एक प्रतीकात्मक गीत में चरखे की सजावट, उसमें प्रयुक्त माळ, जतनी, ताकळो, चमरख, पूणी एवं पीढे आदि के माध्यम से दया, धर्म, प्रेम, ज्ञान एवं सत्य आदि का वर्णन किया गया है। यहां चरखा मानव शरीर का प्रतीक है तो माळ, ताकळा, चमरख, पूणी आदि मानव जीवन में निहित दया, धर्म, प्रेम, ज्ञान एवं सत्य की प्रतीक हैं। जिस तरह चरखे की सार्थकता एवं सौन्दर्य उसके विभिन्न उपकरणों से है, उसी तरह मानव का जीवन भी विभिन्न गुणों से सार्थक एवं सुखमय बन सकता है और इससे उसके स्वरूप में एक निखार आ सकता है।

दया अर् धरम गी घाली माळ, चरखो सूत बणायो रंग लाय।
परेम गी जतनी लगाम गै, चरखो खूब बणयो रंग लाय।
ज्ञान के री घाली चमरख, चरखो खूब बणयो रंग लाय।
सत के री पीढ़ी ढलाय गै, चरखो खूब बणयो रंग लाय।
परेम के री पूणी मंगाय के, मैं तो लागी कातण, चरखो खूब बणयो रंग लाय।[16]

गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में दया, धर्म, प्रेम, सत्य एवं ज्ञान आदि गुणों को अपनाने पर बल दिया है। चरखे का यह गीत भी गुरु जाम्भोजी की विचारधारा से प्रभावित दिखाई देता है।

जां जां दया न धरमूं, तां तां विक्रम करमूं।[17]
ताके न्यांन न जाती मोरव न मुकती।[18]
साच सही म्हे कूड़ न कहिबा।[19]

नया व सुन्दर चरखा भी समय व्यतीत होने पर पुराना हो जाता है और एक दिन टूट जाता है। टूटा चरखा सूत कातने के काम नहीं आ सकता। उसी तरह जब मनुष्य को बुढ़ापा घेर लेता है और उसका शरीर क्षीण हो जाता, तो वहीं किसी प्रकार के काम करने के योग्य नहीं रह पाता।

अब म्हारो चरखो पड़्यो रे पुराणो, चरखो खूब बणयो रंग लाय।
अब मेरै चरखे गी टूटी रे फागणी, चरखो खूब बणयो रंग लाय।[20]

चरखे के एक अन्य गीत में मारू अपनी पत्नी से सूत कातने के लिए कहता है। पत्नी चरखे के न होने या उसके उपकरण खराब होने की बात कहकर सूत कातने में अपनी असमर्थता प्रकट करती हुई कहती है-

चरखो कातै क्यूं नी ए नीमोली?
चरखो कोनी ए मारू जी, म्हे कातां कुंकर जी?
खाती घर जायस्या, म्हे चरखो घड़ायस्यां।
चरखो कातै क्यूं नी ए नीमोली?
ताकळो कोनी ए मारू जी, म्हे कातां कुंकर जी?
लुहार घर जायस्यां, म्हे ताकळो घड़ायस्या।
चरखो कातै क्यूं नी ए नीमोली?[21]

घर में सूत कातने के महत्व को जानकर ही मारू अपनी पत्नी को चरखे के विभिनन उपकरणों को ठीक कराने का आश्वासन देता है, पर पत्नी सूत कातने को तैयार नहीं है। वह नींद आने का बहाना बनाती है। इस बहाने को सुनकर मारू हास्य-व्यंग्य में मोगरी से नींद उड़ाने की बात कहता है।

चरखो कातै क्यूं नी ए नीमोली?
नींद आवै ओ मारू जी, म्हे काता कुंकर जी?
खाती घर जायस्यां, म्हे मोगरी घड़ायस्या,
थारी नींद उड़ायस्यां।[22]

विज्ञान एवं शिक्षा के प्रभाव से आज बिश्नोई समाज में भी परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन से चरखे का भी महत्व कम हो गया है। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के कारण नयी पीढ़ी का घर पर तैयार वस्त्रों की अपेक्षा मिल

एवं रेडीमेड वस्त्रों के प्रति लगाव बढ़ गया है। इसीलिए आज किसी को भी चरखे से सूत कातने में कोई रूचि नहीं है। इसी से समाज का चरखे से सम्बन्ध टूट गया है और साथ ही चरखे से सम्बन्धित लोकगीत भी स्त्री समाज से दूर हो गये हैं। ये लोकगीत बिश्नोई संस्कृति के दर्पण हैं, जो आज लुप्त होने के कगार पर हैं। इनका लुप्त होना बिश्नोई संस्कृति की विशेषताओं के लुप्त होने के बराबर है। ऐसी स्थिति में इन लोकगीतों का संग्रह करना और अधिक आवश्यक हो गया है। ऐसा करके ही हम अपनी संस्कृति की विशेषताओं का संरक्षण कर सकते हैं।

वैज्ञानिक आविष्कारों से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ कृषि के क्षेत्र में भी अत्यधिक परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन के कारण जहां देश की पैदावार में वृद्धि हुई है, वहीं कृषि कार्यों के सम्पन्न होने की गति भी तेज हो गयी है और कृषि कार्य सरल हो गये हैं। इस परिवर्तन का प्रभाव समाज में प्रचलित लोकगीतों पर भी पड़ा है। अब फसल बुआई एवं कटाई ट्रैक्टरों एवं मशीनों से हो रही है। इसलिए इन कार्यों को करते समय न किसी गीत गाने का अवसर मिलता है और न ही आवश्यकता रहती है। कुओं से पानी अब ऊंटों एवं बैलों से नहीं निकाला जाता। अब पानी बिजली एवं मशीनों से निकाला जाता है। कुंओं के पुराने स्वरूप में भी परिवर्तन हो गया है। इसी तरह हाथ की चक्की एवं चरखा भी सामान्य जीवन से दूर हो गये हैं। एक तरह से आज ये संग्रहालय की वस्तुएं बनती जा रही हैं। जीवन में आये परिवर्तन के कारण जीवनयापन के सभी साधन बदल गये हैं और इनसे सम्बन्धित सभी लोकगीत समाज से लुप्त हो रहे हैं। नयी पीढ़ी का पारम्परिक कार्यों एवं उनसे सम्बन्धित लोकगीतों से भी सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। पुरानी पीढ़ी बिना आधार के इन लोकगीतों को नयी पीढ़ी को हस्तांतरित नहीं कर पा रही है। विज्ञान ने जहां हमें अनेक प्रकार की सुख-सुविधाएं दी हैं, वहीं उसने हमारी संस्कृति पर जो चोट पहुंचायी है, उसकी पूर्ति होना असम्भव है। ऐसी स्थिति में श्रम परिहार के इन लोकगीतों को संग्रहित करना और अधिक आवश्यक हो गया है। पर्याप्त साधनों के अभाव में किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा इन लोकगीतों का संग्रह करना कठिन होता जा रहा है। अतः आज समाज एवं सरकार दोनों को इस समस्या की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे इस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा हो सके।

संदर्भ:

1. लेखक का निजी संग्रह, श्रम परिहार के गीत, गीत सं. 10
2. डॉ. दुर्गा पाठक, छत्तीसगढ़ी एवं बुंदेली लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 223
3. वही, पृ. 223
4. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल और टीका), 43, 1-4
5. वही, पृ. 95-5
6. लेखक का निजी संग्रह, श्रम परिहार के गीत, गीत सं. 14
7. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, बिश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य, पृ. 436
8. लेखक का निजी संग्रह, श्रम परिहार के गीत, गीत सं. 14
9. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल और टीका), 112-1, 2
10. लेखक का निजी संग्रह, श्रम परिहार के गीत, गीत सं. 4
11. डॉ. भीमसिंह मलिक, हरियाणा लोक साहित्य-सांस्कृतिक संदर्भ, पृ. 39-40
12. रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, सांस्कृतिक राजस्थान, पृ. 142
13. डॉ. दुर्गा पाठक, छत्तीसगढ़ी एवं बुंदेली लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 211
14. लेखक का निजी संग्रह, श्रम परिहार के गीत।
15. वही, गीत सं. ?
16. वही, गीत सं. 12
17. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल और टीका), 18-7, 8
18. वही, पृ. 20-13
19. वही, पृ. 106-1
20. लेखक का निजी संग्रह, श्रम परिहार के गीत, गीत सं. 12
21. वही, गीत सं. 13
22. वही, गीत सं. 13

-डॉ. बनवारी लाल सहू
विभागाध्यक्ष (हिन्दी) से.नि.
एन.एम.पी.जी. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राज.)
मो.: 9414875029

सत्यवान-सावित्री की कथा का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व

सत्यवान-सावित्री की कथा भारतीय संस्कृति और धार्मिक साहित्य में एक प्रसिद्ध कथा है, जो प्रेम, सत्य, साहस और त्याग की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत करती है। यह कथा महाभारत के 'विवाह वनपर्व' में वर्णित है और खासकर नारी शक्ति, सत्यनिष्ठा और ईश्वर पर विश्वास की शिक्षा देती है।

सावित्री, द्रुपद राजा की पुत्री थी, जो अपने समय की सबसे सुंदर और ज्ञानी राजकुमारी मानी जाती थी। उनके पिता राजा द्रुपद ने उनकी शादी के लिए एक स्वयंवर का आयोजन किया। स्वयंवर में देश-विदेश के कई शक्तिशाली राजकुमार उपस्थित हुए, लेकिन सावित्री ने उन सभी को नकारते हुए सत्यवान को अपना जीवन साथी चुना। सत्यवान शाल्व के राज्य के राजकुमार थे, जो एक साधारण राजकुमार के रूप में रहते थे और बहुत ही नेक, ईमानदार और साहसी व्यक्ति थे।

सत्यवान की दुखद भविष्यवाणी: सावित्री ने सत्यवान को अपना जीवन साथी चुना, लेकिन सत्यवान की एक दुखद भविष्यवाणी थी। जब उनके माता-पिता ने उनके बारे में जानने के लिए एक ज्योतिषी से सलाह ली, तो ज्योतिषी ने बताया कि सत्यवान का जीवन केवल एक वर्ष का है और वह इस एक साल में मृत्यु को प्राप्त होंगे। यह सुनकर सावित्री के पिता बहुत चिंतित हुए और उन्होंने अपनी बेटी को इस विवाह से मना किया, लेकिन सावित्री ने दृढ़ निश्चय किया कि वह सत्यवान से विवाह करेंगी। उनका मानना था कि एक जीवन साथी के रूप में सत्यवान ही सबसे उपयुक्त हैं और उनका विश्वास था कि उनका प्रेम और सत्यनिष्ठा उनके पति को मृत्यु से बचा सकती है।

विवाह और जंगलवास: सावित्री ने सत्यवान से विवाह किया और उसके बाद वह उनके साथ जंगल में रहने के लिए चली गई, जहां वे तपस्वी जीवन बिताने लगे। सत्यवान अपनी पत्नी के साथ जंगल में लकड़ी काटने का काम करते थे और सावित्री उनके साथ हर कष्ट सहन करती थीं। एक दिन सत्यवान जंगल में लकड़ी काटने के लिए गए और सावित्री उनके साथ थीं। उसी दिन, जैसे ही सत्यवान ने लकड़ी काटी, वह अचानक गिर पड़े और उनकी मृत्यु हो गई।

यमराज का आगमन: जब सत्यवान की मृत्यु हुई, तब यमराज, मृत्यु के देवता, उनके प्राणों को लेने के लिए आए। उन्होंने सत्यवान की आत्मा को अपनी यमध्वज पर बिठाया और उसे अपने साथ ले चलने लगे। सावित्री, जो पहले से ही अपने पति के साथ बैठी हुई थीं, इस दृश्य को देखकर घबराई नहीं। वह धैर्य और साहस से भरकर यमराज के पीछे-पीछे चलने लगीं।

सावित्री ने यमराज से कहा, 'मुझे मेरे पति की आत्मा वापस चाहिए। आप तो मृत्यु के देवता हैं, लेकिन क्या आप सत्य के साथ अन्याय कर सकते हैं?' यमराज ने पहले तो उन्हें मनाने का प्रयास किया और कहा कि सत्यवान का जीवनकाल समाप्त हो चुका है, अब वह जीवित नहीं रह सकते। लेकिन सावित्री ने यमराज से कहा कि वह अपने पति को किसी भी कीमत पर नहीं खोने देंगी।

यमराज से संघर्ष: सावित्री ने यमराज से तीन वरदान मांगे। पहला वरदान था कि उनके ससुराल की राज्य संपत्ति फिर से लौटाई जाए, दूसरा वर था कि उनके पिता को संतान सुख मिले, और तीसरा वरदान था कि सत्यवान को जीवनदान मिले। यमराज ने सावित्री की निष्ठा, सत्यनिष्ठा और साहस को देखकर उन्हें वरदान देने का निर्णय लिया। पहले दो वरदान वह दे चुके थे, लेकिन जब उन्होंने तीसरे वरदान के बारे में सोचा, तो यमराज ने सावित्री को चेतावनी दी कि सत्यवान का जीवनकाल खत्म हो चुका है, और मृत्यु को टाला नहीं जा सकता।

यमराज का वरदान: लेकिन सावित्री ने यमराज से कहा कि वह उन्हें सत्यवान को जीवनदान देने का आदेश दें, क्योंकि उनके प्यार और विश्वास में शक्ति है। यमराज ने अंततः सावित्री के दृढ़ संकल्प और सत्य के प्रति उनके विश्वास को देखकर सत्यवान को पुनः जीवन प्रदान कर दिया।

सावित्री ने अपनी जीत को भगवान के प्रति श्रद्धा और अपने प्रेम की शक्ति के रूप में स्वीकार किया। यमराज ने भी उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि जो व्यक्ति सत्य, प्रेम और साहस के मार्ग पर चलता है, उसकी कोई भी शक्ति उसे पराजित नहीं कर सकती।

कथा का संदेश: सावित्री की कथा न केवल प्रेम और सत्य के महत्व को दर्शाती है, बल्कि यह भी बताती है कि सच्चे प्रेम में कितनी शक्ति होती है, जो किसी भी कठिनाई और संकट को पार कर सकती है। सावित्री ने अपने सत्य और प्रेम के बल पर मृत्यु को भी हराया। इस कथा का एक महत्वपूर्ण संदेश यह है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को निभाने में कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिए और सत्य के

मार्ग पर अडिग रहना चाहिए, क्योंकि सत्य और धर्म का पालन करने से कोई भी कठिनाई हल हो सकती है।

सावित्री की कथा भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति, प्रेम और सत्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत की जाती है। यह भी दर्शाती है कि यदि नारी अपने कर्तव्यों और संबंधों के प्रति पूरी तरह निष्ठावान और साहसी हो, तो वह किसी भी चुनौती का सामना कर सकती है।

सत्यवान-सावित्री की कथा का महत्व: सत्यवान-सावित्री की कथा भारतीय पौराणिक साहित्य में एक अद्वितीय स्थान रखती है। यह न केवल प्रेम और निष्ठा की अद्‌भुत गाथा है, बल्कि साहस, आत्मबल और नैतिकता के शाश्वत मूल्यों का प्रतीक भी है। महाभारत के 'वनपर्व' में वर्णित इस कथा में एक पत्नी के अपने पति के प्रति अडिग प्रेम और धर्मपालन की मिसाल प्रस्तुत की गई है।

यह कथा केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज और संस्कृति में इसकी गूंज आज भी सुनाई देती है। सावित्री को भारतीय नारी शक्ति का प्रतीक माना जाता है, जो अपने अधिकारों और रिश्तों की रक्षा के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम है। उनकी कहानी आज भी हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व: सत्यवान-सावित्री की कथा भारतीय दर्शन और संस्कृति के गहरे मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। यह जीवन और मृत्यु के रहस्यों को भी उजागर करती है। सत्यवान और सावित्री का प्रेम, उनकी कठिनाइयां, और सावित्री की यमराज से टक्कर यह दर्शाती है कि धैर्य और समर्पण से हर कठिनाई पर विजय पाई जा सकती है।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता: आज के समय में जब रिश्ते और सामाजिक मूल्य बदल रहे हैं, सत्यवान-सावित्री की कथा हमें याद दिलाती है कि सच्चा प्रेम, समर्पण और नैतिकता कभी पुराने नहीं होते। सावित्री का साहस और दृढ़ता आधुनिक महिलाओं के लिए एक आदर्श है। यह कथा हमें सिखाती है कि विपरीत परिस्थितियों में भी मानवता, प्रेम और नैतिकता को बनाए रखना कितना आवश्यक है।

उद्देश्य: सावित्री के चरित्र के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार प्राचीन मूल्यों और आधुनिक सोच के बीच एक पुल बनाया जा सकता है।

सत्यवान-सावित्री की यह कालजयी कथा एक नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का प्रयास है, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करती है।

कथा के प्रमुख तत्व: सत्यवान-सावित्री की कथा भारतीय पौराणिक साहित्य की एक अमर गाथा है, जो कई गहरे और जटिल तत्वों को समेटे हुए है। इस कथा के प्रत्येक तत्व में न केवल पौराणिक, बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक मूल्य भी निहित हैं। ये तत्व न केवल कहानी को जीवंत बनाते हैं, बल्कि इसे हर युग के लिए प्रासंगिक भी बनाते हैं।

1. **प्रेम और निष्ठा:** सावित्री और सत्यवान का प्रेम इस कथा का केंद्र बिंदु है। यह प्रेम केवल शारीरिक या सांसारिक आकर्षण तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मा का संबंध है। सावित्री का अपने पति के प्रति समर्पण और उसकी रक्षा के लिए यमराज से संवाद प्रेम की अतुलनीय शक्ति को दर्शाता है।

2. **धर्म और कर्तव्य का पालन:** सावित्री का चरित्र धर्म के प्रति गहरी आस्था और अपने कर्तव्यों के प्रति अडिगता का प्रतीक है। उनके प्रयास यह सिखाते हैं कि जीवन में किसी भी परिस्थिति में धर्म और कर्तव्य का पालन करना सबसे महत्वपूर्ण है।

3. **साहस और दृढ़ संकल्प:** यमराज से अपने पति के प्राण वापस लाने के लिए सावित्री का साहस और धैर्य इस कथा का एक और मुख्य तत्व है। यह दिखाता है कि आत्मबल और अडिग इच्छाशक्ति से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

4. **संवाद का महत्व:** यमराज और सावित्री के बीच के संवाद केवल तर्क-वितर्क का आदान-प्रदान नहीं हैं, बल्कि वे धर्म, जीवन, और नैतिकता के गहरे रहस्यों को उजागर करते हैं। सावित्री का तर्कपूर्ण संवाद यमराज को झुकने के लिए मजबूर कर देता है, जो वाणी की शक्ति को रेखांकित करता है।

5. **प्रकृति और मानव का संबंध:** सत्यवान का जंगल में लकड़ी काटना और उनका वहीं मृत्यु का सामना करना, मानव और प्रकृति के गहरे संबंध का प्रतीक है। यह कथा बताती है कि प्रकृति और जीवन का चक्र एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।

6. **आध्यात्मिकता और मृत्यु का दर्शन:** कथा में यमराज का चरित्र मृत्यु के अपरिहार्य सत्य को व्यक्त करता है। यह जीवन और मृत्यु के बीच की कड़ी को समझने और स्वीकारने का एक गहरा संदेश है।

7. स्त्री का शक्ति स्वरूप: सावित्री का संघर्ष यह दर्शाता है कि एक नारी केवल प्रेम और करुणा का प्रतीक नहीं है, बल्कि उसमें शक्ति, विवेक और अदम्य साहस का समावेश भी है। यह कथा नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व को उजागर करती है।

8. संघर्ष और विजय: सत्यवान के अल्पायु होने की भविष्यवाणी से लेकर यमराज के समक्ष सावित्री की जीत तक, यह कथा संघर्ष और विजय का अनुपम उदाहरण है। यह सिखाती है कि कठिन परिस्थितियों का सामना कैसे किया जाए और सफलता कैसे प्राप्त की जाए।

इन तत्वों का समकालीन महत्व

कथा के ये तत्व आधुनिक समाज में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। ये प्रेम, धर्म, साहस, और संवाद की शक्ति को दर्शाते हैं, जो हर व्यक्ति के जीवन को मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। सत्यवान-सावित्री की कथा मानवीय मूल्यों और नैतिकता का एक जीवंत प्रतीक है।

स्त्री शक्ति: सावित्री के साहस का संदेश

सत्यवान-सावित्री की कथा भारतीय संस्कृति में स्त्री शक्ति का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह न केवल पौराणिक आख्यान है, बल्कि स्त्री के अदम्य साहस, धैर्य और संकल्प का प्रतीक है। सावित्री का चरित्र हमें सिखाता है कि एक नारी में कितनी असीम शक्ति, बुद्धिमत्ता और विवेक होता है।

1. साहस और दृढ़ता का प्रतीक: सावित्री का अपने पति सत्यवान के जीवन को बचाने के लिए यमराज से टकराना यह दर्शाता है कि साहस और दृढ़ संकल्प से सबसे कठिन परिस्थितियों को भी बदला जा सकता है। उन्होंने यह साबित किया कि जब किसी नारी की इच्छा सच्ची होती है और उसके प्रयास अडिग होते हैं, तो वह असंभव को भी संभव बना सकती है।

2. स्त्री का मानसिक और आध्यात्मिक बल: सावित्री केवल बाहरी साहस का नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक बल का भी प्रतीक हैं। उनका यमराज से तर्कपूर्ण संवाद यह दर्शाता है कि स्त्री में बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ नैतिक शक्ति भी होती है, जिससे वह अपनी और अपनों की रक्षा कर सकती है।

3. पारिवारिक मूल्यों के प्रति समर्पण: सावित्री का अपने पति के प्रति अडिग प्रेम और समर्पण स्त्री की पारिवारिक मूल्यों में आस्था को उजागर करता है। यह संदेश देती है कि परिवार के प्रति निष्ठा और स्नेह किसी भी संकट का सामना करने की ताकत दे सकता है।

4. कठिन परिस्थितियों में नेतृत्व: सावित्री की कथा यह भी बताती है कि एक स्त्री किसी भी कठिन परिस्थिति में नेतृत्व की भूमिका निभा सकती है। सत्यवान की मृत्यु के बाद, उनके संघर्ष और दृढ़ता ने न केवल उनके पति को जीवनदान दिया, बल्कि यह भी दिखाया कि संकट के समय नेतृत्व का जिम्मा नारी भी संभाल सकती है।

5. आधुनिक संदर्भ में सावित्री का संदेश: आज के युग में, जब महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष कर रही हैं- चाहे वह करियर हो, परिवार हो, या समाज में अपने अधिकारों की लड़ाई- सावित्री की कथा उन्हें प्रेरणा देती है।

महिलाओं का साहस: सावित्री का साहस यह संदेश देता है कि महिलाएं जीवन की हर चुनौती का सामना कर सकती हैं।

समानता और अधिकार: यह कथा आधुनिक महिला को यह विश्वास दिलाती है कि वे न केवल पुरुषों के बराबर हैं, बल्कि समाज के निर्माण और सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

सामाजिक संघर्ष: सावित्री का संघर्ष यह प्रेरणा देता है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, धैर्य और संघर्ष के बल पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

6. स्त्री शक्ति का शाश्वत संदेश: सावित्री की कहानी केवल एक पौराणिक कथा नहीं है। यह हर युग की नारी को उसकी असीम शक्ति, साहस और विवेक का बोध कराती है। यह दिखाती है कि एक नारी न केवल परिवार की रक्षा कर सकती है, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

निष्कर्ष: सावित्री का साहस और संघर्ष स्त्री शक्ति का सार है। यह कथा हर नारी को प्रेरित करती है कि वह अपने आत्मबल, विवेक और साहस के बल पर जीवन की हर बाधा को पार कर सकती है। सावित्री का साहस यह संदेश देता है कि नारी शक्ति केवल भौतिक नहीं, बल्कि मानसिक, आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति का प्रतीक है।

-डॉ. राजा राम
गाँव व डा. शेखुपुर दडोली,
जिला फतेहाबाद, हरियाणा
मो.: 9896789100

बिश्नोई गृहस्थ महिलाओं की पंथ के उत्थान में महत्ती भूमिका

भारतीय संस्कृति में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है और जब बात किसी विशिष्ट धार्मिक या सामाजिक आंदोलन की होती है, तो महिलाओं का योगदान और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। बिश्नोई पंथ, जिसे गुरु जंभेश्वर ने 15वीं शताब्दी में स्थापित किया था, न केवल आध्यात्मिकता का संदेश देता है बल्कि पर्यावरण संरक्षण, अहिंसा और समाज कल्याण को भी प्राथमिकता देता है। इस पंथ की स्थापना और प्रचार में पुरुषों के साथ-साथ बिश्नोई गृहस्थ महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है।

बिश्नोई पंथ में गृहस्थ महिलाएँ न केवल परिवार की आधारशिला होती हैं, बल्कि वे इस संप्रदाय की शिक्षाओं को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता और धार्मिक मूल्यों को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस आलेख में हम विस्तार से चर्चा करेंगे कि कैसे बिश्नोई गृहस्थ महिलाओं ने पंथ के उत्थान में अपनी महत्ती भूमिका निभाई है और आज भी निभा रही हैं।

1. बिश्नोई पंथ: बिश्नोई पंथ की स्थापना गुरु जंभेश्वर (जंभोजी) ने सन् 1485 में राजस्थान के नागौर जिले के पीपासर गाँव में की थी। उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए 29 नियमों का प्रतिपादन किया, जिनमें से कई नियम अहिंसा, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक नैतिकता और सत्यनिष्ठा पर आधारित हैं।

इस पंथ में पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त हैं और गृहस्थ जीवन को श्रेष्ठ माना गया है। बिश्नोई समाज में महिलाएँ सिर्फ परिवार तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि समाज की संरचना, धर्म प्रचार, पर्यावरण रक्षा और सामाजिक न्याय की प्रहरी भी होती हैं।

2. बिश्नोई महिलाओं की पारिवारिक भूमिका और धर्म संरक्षण

i) **धर्म के मूल सिद्धांतों को बनाए रखना:** बिश्नोई गृहस्थ महिलाएँ परिवार में पंथ की शिक्षाओं को बनाए रखने और नई पीढ़ियों में उन्हें स्थानांतरित करने की जिम्मेदारी निभाती हैं। वे बच्चों को गुरु जंभेश्वर के उपदेशों, 29 नियमों और धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में सिखाती हैं।

ii) **पारिवारिक संस्कारों का संचालन:** बिश्नोई समाज में महिलाएँ गृहस्थ धर्म को पवित्र मानती हैं। वे परिवार को सदाचार, परोपकार, सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाती हैं, जिससे समाज में नैतिकता बनी रहती है।

iii) **पूजा-पाठ और धार्मिक आयोजनों का संचालन:** बिश्नोई महिलाएँ परिवार में नित्य पूजन, कथा, भजन-कीर्तन और धार्मिक उत्सवों का आयोजन करती हैं, जिससे समाज में आध्यात्मिक जागरूकता बनी रहती है।

3. पर्यावरण संरक्षण में बिश्नोई महिलाओं की भूमिका

i) **वृक्षों और वन्यजीवों की रक्षा:** बिश्नोई महिलाओं का पर्यावरण संरक्षण में योगदान ऐतिहासिक और प्रेरणादायक है। 1730 ईस्वी में अमृता देवी बिश्नोई ने 'सिर सांठे रूंख रहे तो भी सस्तो जान' (यानि, पेड़ बचाने के लिए सिर कट जाए तो भी सस्ता सौदा है) का नारा दिया और 363 बिश्नोई अनुयायियों सहित अपने प्राणों की आहुति दी।

आज भी बिश्नोई गृहस्थ महिलाएँ:

- अपने घरों के आसपास वृक्षारोपण करती हैं।
- पेड़ों को काटने से रोकती हैं।
- वन्यजीवों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

ii) **पशु संरक्षण और गोसेवा:** बिश्नोई समाज में गाय और हिरण जैसे पशुओं की रक्षा महत्वपूर्ण मानी

जाती है। गृहस्थ महिलाएँ–

– घरों में गौशालाएँ चलाती हैं।

– घायल और बीमार हिरणों और अन्य वन्यजीवों की देखभाल करती हैं।

– शिकारियों और वन कटाई का विरोध करती हैं।

iii) जल संरक्षण और स्वच्छता अभियान: बिश्नोई महिलाएँ जल संरक्षण के महत्व को समझती हैं और परंपरागत जल स्रोतों की सफाई और देखभाल करती हैं। वे गाँवों में–

– तालाबों और कुओं की सफाई करती हैं।

– जल संग्रहण और उपयोग में सावधानी बरतती हैं।

– जल बचाने के लिए अपने परिवार और बच्चों को शिक्षित करती हैं।

4. सामाजिक सुधार और महिला सशक्तिकरण

i) महिला शिक्षा और जागरूकता: बिश्नोई पंथ में महिलाएँ शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण मानती हैं। वे बेटियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं और सामाजिक बुराइयों को दूर करने में योगदान देती हैं।

ii) दहेज और बाल विवाह का विरोध: बिश्नोई समाज में दहेज प्रथा और बाल विवाह का कड़ा विरोध किया जाता है। गृहस्थ महिलाएँ अपने बेटों को दहेज न लेने और अपनी बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

iii) स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा: बिश्नोई महिलाएँ अपने घर और समुदाय में स्वच्छता, पौष्टिक आहार और प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देती हैं। वे आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों और पारंपरिक घरेलू उपचारों का उपयोग कर समाज के स्वास्थ्य स्तर को सुधारने में योगदान देती हैं।

5. आधुनिक बिश्नोई गृहस्थ महिलाओं की भूमिका

i) सामाजिक कार्यों में भागीदारी: आज बिश्नोई महिलाएँ NGO, महिला मंडल और सामाजिक संगठनों से जुड़कर पर्यावरण और महिला अधिकारों के लिए काम कर रही हैं।

ii) शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ना: बिश्नोई महिलाएँ अब उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर, शिक्षक, वकील, पत्रकार और प्रशासनिक अधिकारी बन रही हैं, जिससे समाज का विकास हो रहा है।

iii) डिजिटल मीडिया और प्रचार: अब महिलाएँ सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग कर बिश्नोई पंथ के संदेशों को दुनिया भर में फैला रही हैं।

निष्कर्ष : बिश्नोई गृहस्थ महिलाओं की भूमिका पंथ के उत्थान में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वे न केवल धार्मिक और पारिवारिक परंपराओं की संरक्षक हैं, बल्कि वे पर्यावरण रक्षा, सामाजिक सुधार और महिला सशक्तिकरण में भी अग्रणी भूमिका निभाती हैं।

अमृता देवी बिश्नोई का बलिदान यह सिद्ध करता है कि महिलाएँ न केवल घर संभालने में सक्षम हैं, बल्कि वे समाज के उत्थान और पर्यावरण रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देने को तैयार हैं।

आधुनिक युग में भी बिश्नोई गृहस्थ महिलाएँ अपने परंपरागत मूल्यों को बनाए रखते हुए, समाज में जागरूकता, शिक्षा और नवाचार का संचार कर रही हैं। उनके प्रयासों से बिश्नोई पंथ और भी अधिक सशक्त और प्रभावशाली बन रहा है।

'बिश्नोई गृहस्थ महिलाएँ केवल परिवार की आधारशिला नहीं, बल्कि समाज की रीढ़ हैं। वे धर्म, प्रकृति और मानवता की सच्ची रक्षक हैं।'

–किरण बिश्नोई
धांगड़, जिला फतेहाबाद
मो.: 9991824229

बिश्नोई सभा, हिसार की नई कार्यकारिणी गठित

15 मार्च, 2025 को बिश्नोई सभा, हिसार की नई कार्यकारिणी का गठन हुआ। इस कार्यकारिणी में निम्नलिखित पदाधिकारियों व सदस्यों का चयन हुआ है-

श्री जगदीशचंद्र कड़वासरा सुपुत्र श्री बलराम सिंह कड़वासरा, निवासी जवाहर नगर, हिसार सभा के प्रधान चुने गए। आप एक सक्रिय समाजसेवी हैं।

श्री आत्मा राम जाजूदा सुपुत्र श्री इन्द्राज जाजूदा, निवासी 372 एमजीए, सैक्टर 21, हिसार सभा के उपप्रधान चुने गए।

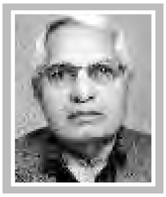

श्री नरसिंह ज्याणी सुपुत्र श्री रामजी लाल ज्याणी, निवासी मण्डी आदमपुर, हिसार सभा के उपप्रधान चुने गए।

श्री रमेश खिचड़ सुपुत्र श्री भागीरथ खिचड़, निवासी सदलपुर, हिसार सभा के सचिव चुने गए।

श्री संजय सिहाग सुपुत्र श्री लीलूराम सिहाग, निवासी मील गेट, हिसार सभा के सह सचिव चुने गए।

श्री कृष्ण लाल पूनियां सुपुत्र श्री कांशी राम पूनियां, निवासी भोडिया बिश्नोईयान, हिसार सभा के कोषाध्यक्ष चुने गए।

श्री राजेन्द्र धायल सुपुत्र श्री गणपत धायल, निवासी गांव मंगाली सुरतिया, हिसार सभा के कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

श्री प्रेम कुमार खिचड़ सुपुत्र श्री राजा राम खिचड़, निवासी आदमपुर, हिसार सभा के कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

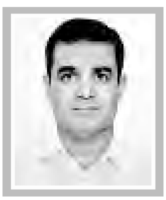

श्री सुनील गोदारा सुपुत्र श्री मनोहर लाल गोदारा, निवासी सदलपुर, हिसार सभा के कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

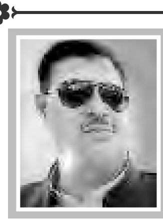

श्री शशीकांत सहारण सुपुत्र श्री दलीप सिंह सहारण, निवासी काजला, हिसार सभा की कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

श्री अविनय बिश्नोई सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार खिचड़, निवासी 579, पी.एल.ए., हिसार सभा के कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

बिश्नोई सभा, हिसार की नव नियुक्त कार्यकारिणी को अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व ढेरों शुभकामनाएँ।

स्थायी आमंत्रित सदस्य

1. प्रधान, बिश्नोई सभा, आदमपुर
2. प्रधान, बिश्नोई सभा, नई दिल्ली
3. प्रधान, बिश्नोई सभा, गुरुग्राम
4. प्रधान, बिश्नोई सभा, पंचकुला
5. प्रधान, बिश्नोई सभा, फतेहाबाद
6. प्रधान, बिश्नोई सभा, रतिया
7. प्रधान, बिश्नोई सभा, टोहाना
8. प्रधान, बिश्नोई सभा, कुरुक्षेत्र
9. प्रधान, बिश्नोई सभा, भिवानी
10. प्रधान, बिश्नोई सभा, सिरसा
11. प्रधान, बिश्नोई सभा, डबवाली

विशेष आमंत्रित सदस्य

1. श्री भजनलाल फुरसाणी पुत्र श्री बगड़वात फुरसाणी, सदलपुर
2. श्री सुभाष तरड़ पुत्र श्री रामजस तरड़, सीसवाल
3. श्री अमर सिंह मांझू पुत्र श्री ख्याली राम, चौधरीवाली
4. श्री बद्री धायल पुत्र श्री बोगा राम, मंगाली सुरतिया
5. श्री अनिल पुनिया पुत्र श्री मखन लाल पुनिया, लांधड़ी
6. श्री कुलदीप देहडू पुत्र श्री विजय सिंह देहडू, सिवानी
7. श्री हेतराम माल पुत्र स्व. श्री मोहर सिंह, चिकनवास
8. श्री मेहन्द्र सहू, जिला पार्षद, कालीरावण
9. श्री बीर सिंह राहड़, जिला पार्षद, लाखपुल
10. श्री विक्रम पुत्र श्री पृथ्वी सिंह ज्याणी, दुर्जनपुर
11. श्री निहाल सिंह पुत्र श्री रामप्रताप, मलापुर
12. श्री राम कुमार पुत्र श्री लालूराम ज्याणी, तलवंडी बादशाहपुर
13. श्री सुभाष बैनीवाल पुत्र श्री अमरचंद, असरावां
14. श्री पृथ्वी खिचड़ पुत्र श्री पतराम, चौधरीवास
15. श्री राजेन्द्र गोदारा पुत्र श्री चेतराम, बुडाखेड़ा
16. श्री प्रेम ज्याणी पुत्र श्री बस्ती राम, धांसू
17. श्री उत्तम भांभू पुत्र श्री पहाड़ सिंह, आदमपुर
18. श्रीमनदीप बिश्नोई एडवोकेट पूर्व प्रधान बार एसोसिएशन, हिसार
19. श्री सुधीर काकड़ पुत्र श्री सुरजीत, आदमपुर
20. श्री महेन्द्र ज्याणी पुत्र श्री भाल सिंह ज्याणी, सारंगपुर
21. श्री विनोद खिचड़ पुत्र श्री हंसराज, सदलपुर
22. श्री प्रदीप मांझू पुत्र श्री हंसराज, चौधरीवाली
23. श्री महेन्द्र लांबा पुत्र श्री कालूराम, कालवास
24. श्री रामकुमार पुत्र श्री कालूराम, तलवंडी रूक्का
25. श्री शमशेर सिंह पुत्र श्री हरनाम, कैमरी
26. श्री अरविन्द जांगू पुत्र श्री महाबीर जांगू, दुर्जनपुर
27. श्री आत्माराम पटवारी पुत्र श्री रामजी ज्याणी, आदमपुर गांव
28. श्री गंगाजल पुत्र श्री भागीरथ गोदारा, मल्लापुर
29. श्री परसराम कालीराणा पुत्र श्री गोपाल कालीराणा, सदलपुर

गत 28 जनवरी 2025 को बिश्नोई सभा, हिसार की आम सभा की बैठक बिश्नोई मंदिर हिसार के प्रांगण में आयोजित की गई थी। बैठक में मौजूदा कार्यकारिणी का कार्यकाल पूरा होने पर नई कार्यकारिणी के अध्यक्ष एवं कमेटी सदस्यों की नियुक्ति के लिए सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी के गठन का प्रस्ताव पारित कर मुझे आगामी कार्यवाही के लिए अधिकार सौंपा था।

समाज के सभी बुद्धिजिवियों से बातचीत करके बिश्नोई सभा, हिसार की नई कार्यकारिणी का गठन करने के लिए मैंने श्री सुभाष चन्द्र बिश्नोई की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया था, जिसमें श्री बलदेव खोखर, श्री लीलूराम बिश्नोई, श्री राजाराम खिचड़, श्री सहदेव कालीराणा, श्री बलदेव लोहमरोड़, श्री भूप सिंह गोदारा एवं श्री इन्द्रजीत बिश्नोई सदस्य के रूप में शामिल थे। उपरोक्त कमेटी ने समाज के सभी प्रबुद्धजनों से बातचीत करके बिश्नोई सभा हिसार की नई कार्यकारिणी के लिए सर्वसम्मति से निम्नलिखित सदस्यों के नाम सुझाए हैं, जिन्हें मैं 15.03.2025 को ज्यों का त्यों स्वीकार करते हुए नई कार्यकारिणी के रूप में गठन करता हूँ।

–कृते **चौ. कुलदीप बिश्नोई**
पूर्व सांसद (14वीं व 15वीं लोकसभा)
पूर्व विधायक, आदमपुर, हरियाणा
(गत चार कार्यकाल से)

'अमर ज्योति पत्रिका सदस्यता अभियान'

हिसार: अमर ज्योति पत्रिका की सदस्यता हेतु पश्चिम बंगाल के कोलकाता, मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर और रायसेन जिले में जाना हुआ। 10 मार्च को सुबह 9 बजे बिश्नोई मंदिर हिसार से चलकर हिसार बस स्टेशन से दिल्ली हरियाणा रोडवेज बस द्वारा 3 बजे बस स्टेशन दिल्ली पहुंचा। वहां से टेम्पो द्वारा नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचा। नई दिल्ली से हावड़ा जंक्शन (कोलकाता) के लिए ट्रेन पूर्वा एक्सप्रेस का समय सायं 5.40 बजे का था जो कि प्लेटफार्म नंबर 14 से जाती है। 5 बजकर 10 मिनट को ट्रेन प्लेटफार्म पर लगी। स्टेशन पर होली पर्व व प्रयागराज जाने हेतु यात्रियों की संख्या बहुत ज्यादा थी। ट्रेन में चढ़ने के बाद आरक्षित सीट साइड लोवर बर्थ पर सामान रखने के बाद स्थान ग्रहण किया। सही 5 बजकर 40 मिनट पर ट्रेन आगे गंतव्य स्थान की ओर रवाना हुई जो कि रास्ते में इटावा, अलीगंज, गया, कोडरमा, धनबाद, आसनसोल होते हुए दूसरे दिन शाम 6 बजे कोलकाता शहर के हावड़ा जंक्शन पहुंची। श्री कैलाश जी लोमरोड अपने बाइक द्वारा स्टेशन से लेने पहुंचे। 12-13 मार्च को कैलाश जी के साथ शहर में बिश्नोईजनों के प्रतिष्ठानों पर अमर ज्योति पत्रिका के सदस्य जोड़े गए जिसमें कि राजू जी सियाक भी साथ रहे। 14 मार्च सुबह को कैलाश जी लोमरोड के साथ कोलकाता शहर के बक्शी बागान नजदीक पुलिस स्टेशन, के पास हवन स्थल पर पहुंचे। हवन स्वामी महेशानंद जी, सालासर के मुखारविंद द्वारा हुआ एवं बाद में पाहल बनाकर सबको ग्रहण करवाया गया। इसके बाद धर्मसभा हुई और बाद में सभी के लिए भोजन की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। बिश्नोई समाज कोलकाता में सबसे पहले 2003 में श्री हरदाना राम जी सियाग और हनुमान जी मांजू यहां आकर बसे थे और अपना मोबाइल एसेसरीज का कार्य शुरू किया था। उसके बाद धीरे धीरे समाज बढ़ता गया और अब यहां 200 के करीब बिश्नोईजन कोलकाता शहर में अलग अलग जगह निवास करते हैं। इनका यहां मोबाइल एसेसरीज, हार्डवेयर, ट्रांसपोर्ट इत्यादि व्यवसाय है। शहर में बात करें तो चांदनी मार्किट, फैंसी मार्किट, बड़ा बाजार एवं अन्य शहर दानकुनि, आसनसोल, सिलीगुड़ी, बीरभूम (नलहाटी) इत्यादि में इनकी फर्म है। इनका मोबाइल एसेसरीज का सामान कोलकाता शहर से सिलीगुड़ी, गुवाहाटी, मिजोरम, अंडमान निकोबार, भुवनेश्वर, कटक इत्यादि जगह जाता है। सदस्यता अभियान के दौरान श्री कैलाश जी लोमरोड के साथ कोलकाता शहर के ईडन गार्डन इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, हावड़ा ब्रिज, बेलूर मठ, विक्टोरिया मेमोरियल इत्यादि स्थानों पर जाना हुआ। हावड़ा ब्रिज की संख्या दो है और ये हुगली नदी के ऊपर बने हुए है। इस ब्रिज की खास बात यह है कि इनके नीचे कोई पिलर नहीं है। शहर में अंग्रेजों के शासनकाल की बहुत बड़ी-बड़ी इमारतें आज भी बहुत अच्छी तरह से मौजूद हैं। सबसे पहले स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा कोलकाता शहर से शुरू हुई थी जिसकी बहुत बड़ी ईमारत शहर में मौजूद है। इस शहर का हावड़ा जंक्शन देश के बड़े स्टेशनों में से एक है जिसमें कि 24 प्लेटफार्म है। इसके बाद यहां दूसरा जंक्शन सियालदह है। देश के हर कोने में जाने के लिए यहां से ट्रेन मिलती है। 16 मार्च रात्रि 11.40 पर मेरी अगली यात्रा के लिए ट्रेन (हावड़ा मुंबई मेल) हावड़ा से मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के गाडरवारा के लिए थी। ठीक रात्रि 10 बजे श्री कैलाश जी लोमरोड अपने निवास स्थान से स्टेशन पर छोड़ने आए। 11 बजे ट्रेन का अनाउसमेंट हुआ और 11.20 पर प्लेटफार्म पर लगी। इसके बाद श्री कैलाश जी से विदाई ली और ट्रेन में स्थान ग्रहण किया। ट्रेन हावड़ा से रात्रि 11.40 बजे चल कर राज्य पश्चिमी बंगाल, बिहार, झारखंड, यूपी और मध्यप्रदेश के वर्धमान, दुर्गापुर, आसनसोल, हजारीबाग, कोडरमा, प्रयागराज, सतना, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर होते हुए दूसरे दिन रात्रि 10 बजे गाडरवारा स्टेशन पहुंची। श्री स्वप्निल जी बिश्नोई अध्यक्ष बिश्नोई समाज, गाडरवारा स्टेशन से स्कूटी पर लेने पहुंचे। उनके निवास स्थान पर पहुंचने के बाद स्नान आदि करने के बाद रात्रि भोजन ग्रहण किया। श्री स्वप्निल जी बिश्नोई ने बताया कि गाडरवारा बिश्नोई सभा के प्रथम अध्यक्ष स्व. प्रकाश जी बिश्नोई भुसरवा थे। 2015 से अगस्त 2024 तक विशालचंद बिश्नोई अध्यक्ष रहे। इसी समय इनके साथ युवा संगठन के श्री प्रमोद बिश्नोई अध्यक्ष रहे। उसके बाद वर्तमान में 26 अगस्त 2024 से श्री स्वप्निल जी अब बिश्नोई सभा गाडरवारा जिला नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश अध्यक्ष पद पर सेवा देते आ रहे हैं। 18 मार्च को गाडरवारा शहर में अमर ज्योति पत्रिका के सदस्य जोड़े गए। इसी दिन शाम को यहां से 5 बजे चलकर तीन किलोमीटर दूर गांव बोदरी में डोर-टू-डोर सदस्य जोड़े गए। बोदरी गांव में बिश्नोईजनों के कुल 8 घर हैं। यहां डूडी, भुसरवा, बकौड़िया, गोत्र के घर हैं। 19-20 मार्च को गाडरवारा शहर की अलग-अलग कालोनियों में निवासरत बिश्नोईजनों के घरों में जाकर सदस्य जोड़े गए। रास्ते में श्री स्वप्निल जी बिश्नोई के साथ इनके भाई संजय जी बिश्नोई के घर जाना हुआ। इन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि मध्यप्रदेश के नीमच में तीन घर बिश्नोईजनों के है जो कि सब हाड़ा गोत्र से है। मंदसौर में एक घर है जो कि श्याम जी बिश्नोई का है व इनकी गोत्र भोजावत है। सिंगोली में 6 घर बिश्नोइयों के है। भोपाल के पास मंडीदीप में 3 घर है जो कि अनिल जी बिश्नोई, राघवेंद्र और राजू भाई के घर है व डूडी गोत्र के है। इन्होंने बताया कि रावतभाटा में 1 घर है जो कि शरद बिश्नोई का है व ये भोजावत गोत्र से हैं। श्री अरुण कुमार बिश्नोई भुसरवा ने बताया कि गाडरवारा में कुल 55 घर बिश्नोईजनों के है। गाडरवारा के बिश्नोई 150 से 200 वर्ष पूर्व कालपी (कानपुर, उत्तरप्रदेश) से आकर यहां बसे थे। इन्होंने बताया कि आज तक हमारे कोई भी पण्डे (बही भाट) यहां नहीं आए इन्होंने बताया कि अस्थि विसर्जन के लिए जब जाते हैं तो हमारा रिकॉर्ड

इलाहाबाद (प्रयागराज) पण्डों के पास मिलता है। बाजार में श्री राजकुमार जी बिश्नोई की दुकान समता स्टोर पर जाना हुआ। यहां इनकी बर्तनों की दुकान है जो 1984 से है। इनका गोत्र भूसरवा है। 21 मार्च को दिन में गाडरवारा से अध्यक्ष श्री स्वप्निल जी बिश्नोई के साथ चल कर तहसील उदयपुरा जिला रायसेन (मध्यप्रदेश) में डोर टू डोर सदस्य जोड़े गए जिसमें कि तहसील उदयपुरा के स्थानीय निवासी श्री रामसेवक जी बिश्नोई जी ने साथ चलकर वहां निवासरत बिश्नोई घरों के बारे बताया और उनको पत्रिका की सदस्यता से जुड़वाया। तहसील उदयपुरा में कुल 27 घर बिश्नोईजनों के हैं। यहां डूडी, कश्यप, खंडेलवाल टोटल तीन गोत्र के घर हैं। यहां तहसील उदयपुरा के पास ही धोलश्री गांव है जिसमें कि कुल 4 घर बिश्नोइयों के हैं व इनकी सबकी गोत्र डूडी है। श्री रामसेवक जी बिश्नोई निवासी तहसील उदयपुरा ने फोन द्वारा उनको भी यहीं अपने निवास स्थान पर बुलाकर अमर ज्योति पत्रिका की सदस्यता से जुड़वा दिया। यहां से सायं 5 बजे वापिस गाडरवारा की तरफ प्रस्थान किया। 22 मार्च को गाडरवाड़ा की कालोनियों के बचे हुए घरों में सदस्य जोड़े गए। 23 मार्च को गाडरवारा से सुबह 7 बजे जबलपुर/रानी कमलापति जन शताब्दी ट्रेन द्वारा चल कर 9 बजे इटारसी जंक्शन पहुंचना हुआ जहां से कि मेरी ट्रेन हैदराबाद हिसार सुपरफास्ट एक्सप्रेस थी जो कि हैदराबाद से 23 मार्च को दिन में 12.15 बजे इटारसी जंक्शन पहुंची। तत्पश्चात् भोजन ग्रहण किया। यहां से ट्रेन में सवार होकर वाया भोपाल, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, नीमच, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, जयपुर, सीकर, राजगढ़ होकर 24 मार्च को दिन में 1 बजे वापिस हिसार पहुंचा।

23 तारीख रात्रि भोजन रतलाम जंक्शन पर हुआ जो कि गाडरवारा बिश्नोई सभा अध्यक्ष श्री स्वप्निल जी बिश्नोई जी के घर से सुबह आते समय टिफिन में तैयार करके दिया गया। इनका हार्दिक आभार। कोलकाता शहर से श्री कैलाश जी बिश्नोई, श्री राजू जी सियाक का धन्यवाद जिन्होंने कि साथ रहकर वहां से सदस्य जुड़वाने में सहयोग किया एवं कैलाश जी ने सभी दिन अपने घर पर ठहरने व भोजन की अच्छी व्यवस्था रखी। सभी दिन अपने बाइक द्वारा साथ रहे। गाडरवारा बिश्नोई सभा अध्यक्ष श्री स्वप्निल जी बिश्नोई का हार्दिक आभार जिन्होंने कि गाडरवारा शहर, गांव बोदरी एवं तहसील उदयपुरा जिला रायसेन (मध्यप्रदेश) में जहां जरूरत रही वहां अपनी स्कूटी एवं गाड़ी द्वारा जाकर सदस्य जुड़वाने एवं अपने घर पर ठहरने एवं भोजन की अच्छी व्यवस्था रखी। गौरतलब रहे कि इन सभी जगह अमर ज्योति पत्रिका बिश्नोई सभा, हिसार के सभी नए सदस्य जोड़े गए। पहले से यहां कोई सदस्य जुड़े हुए नहीं थे। सभी नए जुड़े सदस्यों का अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार हार्दिक आभार प्रकट करती है। आप सभी का सहयोग ऐसे ही बना रहे एवं गुरु जंभेश्वर जी महाराज का आशीर्वाद आप पर बना रहे यही हमारी कामना है। अमर ज्योति पत्रिका

का सदस्यता अभियान आगे भी अनवरत जारी रहेगा। इसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। अमर ज्योति पत्रिका को पश्चिमी बंगाल एवं मध्यप्रदेश सदस्यता अभियान में कुल 67750 रुपये दान स्वरूप प्राप्त हुए एवं 3350 रुपये आने जाने पर खर्च हुए।

–रामनिवास सिहाग, व्यवस्थापक,
अमर ज्योति पत्रिका, हिसार

20वां स्थापना दिवस आयोजित

पंचकुला: 25 मार्च 2025 को बिश्नोई भवन/मन्दिर, पंचकुला का 20वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में 24 मार्च 2025 को सायं श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का जागरण व भंडारे का आयोजन किया गया। जागरण का कार्यक्रम कथा व्यास श्री राम कुमार जी भादू (कंप्यूटर) एवं पार्टी द्वारा रात्रि को 2 बजे तक लगाया गया। जिसमें श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के सबदों, भजनों और साखियों का श्रोतागणों ने श्रवण एवं रसपान किया। जागरण में माताएं, बहनें, बुजुर्ग और युवा काफी संख्या में उपस्थित रहे। 25 मार्च को सुबह 7 बजे 120 सबदों का हवन व अमृतमयी पाहल बनाया गया और आए हुए सभी धर्म प्रेमी सज्जनों को पाहल ग्रहण करवाया गया।

इस अवसर पर श्री लीलू राम गोदारा, प्रधान, बिश्नोई सभा पंचकुला, श्री सुभाष देहडू , वरिष्ठ उपप्रधान अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम, राजस्थान, श्री जगदीश कड़वासरा, प्रधान बिश्नोई सभा हिसार, श्री रामस्वरूप बेनीवाल, प्रधान बिश्नोई सभा रतिया, श्री निहाल सिंह, प्रधान अखिल भारतीय श्री गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति, श्री नरसी जाणी, उपप्रधान, बिश्नोई सभा हिसार, श्री आत्मा राम जाजूदा, उपप्रधान बिश्नोई सभा हिसार, श्री इंद्रजीत धारणिया, सचिव बिश्नोई सभा डबवाली, श्री विनोद कड़वासरा, प्रधान अखिल भारतीय जीव रक्षा, श्री विनोद थापन, कोषाध्यक्ष, बिश्नोई सभा पंचकुला, श्री दलीप पूनिया, श्री सुभाष जांगू, श्री सतीश पुनिया, रविपाल भादू व सदस्यगण, श्री कुलदीप डेलू, सरपंच चौधरीवाली आदमपुर, श्री धर्मपाल राहड़ दिल्ली, श्री इंद्रजीत बिश्नोई, श्री रामेश्वर सिहाग दिल्ली, श्री दर्शन बिश्नोई, HCS तथा कई हरियाणा की बिश्नोई सभाओं के प्रतिनिधि, श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल हिसार के प्रधान श्री संदीप गोदारा और सदस्यगण तथा पंचकुला, चंडीगढ़, मोहाली और आसपास के धर्मप्रेमी सज्जनों ने स्थापना दिवस के कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

बिश्नोई सभा पंचकुला आए हुए सभी धर्मप्रेमी सज्जनों का कार्यक्रम में शामिल होने और स्थापना दिवस के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

–एल.आर. गोदारा
प्रधान एवं समस्त सभासद, बिश्नोई सभा पंचकुला

श्रद्धा व उल्लास के साथ फाल्गुन अमावस्या मेला संपन्न

सोनड़ी: बाड़मेर जिले में बिश्नोई समाज का सबसे प्राचीन एवं भव्य श्री गुरु जंभेश्वर मंदिर सोनड़ी में 394वां विशाल मेला बड़ी श्रद्धा व उल्लास के साथ में संपन्न हुआ जिसमें हजारों पर्यावरण प्रेमियों ने भगवान जांभोजी के मंदिर में शीष निवाकर विशाल यज्ञ में घी, नारियल, हवन सामग्री स्वाह के साथ में आहुतियां देते हुए मंगल कामना की। प्राचीन समय से चली आ रही मेला संस्कृति अपने आप में एक अनूठी एवं ऐतिहासिक परंपरा रही है जिसमें मेले में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जान पहचान नाते रिश्तेदारी सुख-दुख एवं क्या खोया क्या पाया पर मंथन करते हैं इसी के तहत बाड़मेर जिले में बिश्नोई समाज का सबसे प्राचीन एवं भव्य श्री गुरु जंभेश्वर मंदिर सोनड़ी जहां प्रतिवर्ष तीन मेले लगते हैं इस वर्ष फाल्गुन अमावस्या पर विशाल श्री गुरु जंभेश्वर मेला भरा गया जिसमें हजारों पर्यावरण प्रेमियों ने भगवान जांभोजी के मंदिर में 149 वर्षों से प्रज्ज्वलित अखंड ज्योति के दर्शन कर भगवान जांभोजी से खुशहाली की कामनाएं की। प्रातः आठ बजे सोनड़ी के संत स्वामी रामानंद महाराज एवं स्वामी बालाचार्य महाराज मुकाम के पवन सान्निध्य में विशाल यज्ञ में भगवान जांभोजी की सबदवाणी के 120 शब्दों से यज्ञ एवं अमृत रूपी पाहल बनाकर सैकड़ों श्रद्धालुओं को नशा मुक्त जीवन जीने का संकल्प देते हुए अमृत पान करवाया। निज मंदिर में 149 वर्षों से प्रज्ज्वलित अखंड ज्योति के दर्शन कर खुशहाली की कामनाएं की। मंदिर में भक्तों ने भगवान जांभोजी की जय जयकार से पूरा वातावरण को भक्तिमय बना दिया देखते ही देखते यज्ञ की 50-50 फीट ऊपर लपटें उठने लगीं, साथ ही मूक पक्षियों के लिए बाजरी गेहूं अनाज चुगे का ढेर लगा दिया, भक्तो के उल्लास भरे इस वातावरण में हर कोई भाव विभोर हो रहा था जैसे-जैसे सूर्य चढ़ता गया श्रद्धालुओं का ज्वार बढता गया। मेले के मंच से भगवान जांभोजी की साखी भजन कीर्तन की स्वर लहरियां चारों ओर से गुंजायमान हो रही थी मधुर कंठ के धनी बिश्नोई समाज के विद्वान संत स्वामी बालाचार्य महाराज भगवान जांभोजी व अमर शहीद अमृता देवी के पर्यावरण के सिद्धांत, भगवान जांभोजी की 29 नियमों की आचार संहिता की व्याख्या व गायन बखान करते हुए भक्तों को भाव विभोर कर रहे थे दिन में एक बजे मेला अपने परवान पर था सब की निगाहें मंदिर परिसर में बने विशाल जागरण मंच की ओर थीं जहां बिश्नोई समाज का खुला अधिवेशन हुआ जिसमें समाज के बहुत से वक्ताओं ने क्या खोया क्या पाया पर मंथन करते हुए समाज को कैसे आगे बढ़ाया जाए को लेकर विशेष रूप से चर्चाएं कीं। खुले अधिवेशन को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी के बाड़मेर जिले के जिला अध्यक्ष अनंतराम बिश्नोई ने कहा बच्चों की शिक्षा के साथ संस्कार अनुशासन निर्माण बच्चों में घर से आता है समाज का हर व्यक्ति युवा उद्यमी अधिकारी शिक्षक व्यापारी समाज के विकास में अपना अंशदान देकर सहयोग करें समाज के प्रतिभाशाली जरूरतमंद विद्यार्थियों का मदद करना समाज का मुख्य ध्येय होना चाहिए, साथ मे अपने विचार

में जांभोजी की वाणी धर्म प्रचार के साथ में आह्वान किया कि हर बिश्नोई के घर वर्ष में एक जागरण सत्संग अवश्य लगाया जाए ताकि बच्चों में शिक्षा के साथ धार्मिक विचार हमेशा बने रहें। जाम्भोजी ने जो उपदेश दिये उनको पूर्णतः ग्रहण करें। कार्यक्रम का संचालन बिश्नोई समाज सेवा समिति सोनड़ी के कोषाध्यक्ष सुखराम खिलेरी ने किया।

-जयकिशन गोदारा अध्यापक
पीएम श्री रा.उच्च माध्यमिक विद्यालय, सोनड़ी, बाड़मेर

gkyh ikou io mRlo e fc'ukb lekt dkydkrk }kjk gou ;K ,o ikgy dk;Øe vk;kftr

कोलकाता: बिश्नोई समाज कोलकाता द्वारा शहर के बक्सी बागान, बेहला नजदीक पुलिस स्टेशन, कोलकाता में होली के अवसर पर हवन एवं पाहल कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कि सभी बिश्नोईजन शामिल हुए। श्री बिश्नोई धर्मशाला सालासर से स्वामी महेशानंद जी हवन के लिए यहां पधारे। हर बार होली के पाहल पर स्वामी जी यहां उपस्थित होते हैं। 14 मार्च को सुबह 8 बजे गुरु जी के मुखारविंद से हवन का कार्य शुरू हुआ एवं इसके बाद पाहल बनाकर सभी को ग्रहण करवाया। हवन के बाद धर्मसभा आयोजित कि गई जिसमें श्रवण जी बिश्नोई ने नशे के बारे में कहा कि सबको चाय तक का त्याग करना चाहिए। युवाओं को इस पहल में आगे आना चाहिए और नशे पर हर घर में पूर्ण प्रतिबंध लगे, यह प्रण हमको लेना होगा। इसके बाद सभी के लिए भोजन की व्यवस्था भी की गई जो कि सब मिलकर यहां के बिश्नोईजन हर बार करते हैं। इस अवसर पर पप्पू राम मांजू, ओमप्रकाश कावा, श्रवण कुमार बिश्नोई, प्रवीण कुमार बिश्नोई दानकूनी, कैलाश लोमरोड, राजू जी सियाक, पुखराज सियाक, हनुमान मांजू, सुरेश सियाक, प्रकाश पंवार, बाबू गोदारा, मोहन मांजू, मोहन धातरवाल, ओम पंवार इत्यादि उपस्थित रहे।

फार्म–4 (देखिए नियम 8)

1.	**प्रकाशन स्थल**	:	हिसार, हरियाणा
2.	**प्रकाशन अवधि**	:	मासिक
3.	**(क) मुद्रक का नाम**	:	डोरेक्स ऑफसैट प्रिंटर्स, हिसार
	(ख) पता	:	न्यू दयानंद ऋषि विहार, डी.एन. कॉलेज रोड, हिसार
4.	**प्रकाशक का नाम**	:	जगदीश चन्द्र कड़वासरा
	पता	:	प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार (हरियाणा)
	(क्या भारत का नागरिक है?)	:	हां
	(क्या विदेश है तो मूल देश है)	:	--
5.	**सम्पादक का नाम**	:	डॉ. माया बिश्नोई
	पता	:	कार्यालय, 'अमर ज्योति' श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार, हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है?)	:	हां
	(क्या विदेश है तो मूल देश)	:	--
6.	**उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों।**	:	बिश्नोई सभा, हिसार

मैं जगदीश चन्द्र कड़वासरा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

जगदीश चन्द्र कड़वासरा
प्रधान, बिश्नोई सभा,
हिसार–125 001 (हरियाणा)

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2082 बैशाख की अमावस्या

लगेगी– 27.04.2025 रविवार प्रातः 4 बजकर 50 मिनट पर
उतरेगी– 27.04.2025 रविवार रात्रि 1 बजकर 01 मिनट पर

सम्वत् 2082 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी– 26.05.2025 सोमवार दिन में 12 बजकर 12 मिनट पर
उतरेगी– 27.05.2025 मंगलवार प्रातः 8 बजकर 32 मिनट पर

8.4.2025 को वील्होजी स्मृति मेला (रामड़ावास)। बैशाख अमावस मेला– ओसिया, वाड़ा भाडवी, 27.4.2025 रविवार। 26.4.2025 को रात्रि जागरण एवं 27.4.2025 को हवन एवं मेला।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2023-25
TECH/WPP/HR-04/HISAR/2023-25

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

मुद्रक, प्रकाशक जगदीश चन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अप्रैल, 2025 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX® Printers 9896011117